भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 24 | उदयपुर शनिवार 01 जनवरी 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

सूर्योपासना का पर्व मकर संक्रान्ति

देवता के रूप में सूर्य की उपासना प्रत्येक व्यक्ति अपना पावन कर्तव्य समझता है। मकर संक्रान्ति इस उपासना का सबसे बड़ा पर्व है जो देश के कोने-कोने में मनाया जाता है। इस पर्व की दो मुख्य क्रियाएं गंगा-स्नान और दान हैं। गंगा-स्नान से रोग, शोक, दुख-दारिद्रय और गरीबी से मुक्ति मिलती है तथा जीवन मंगलमय बनता है। इस दिन लोग अंगारों पर तिल चटकाते हैं तथा तिल अथवा तिल से बनी वस्तुएं भेंट करते हैं इसलिए इसे तिल संक्रान्ति भी कहते हैं।

विभिन्न प्रदेशों में यह त्यौहार विविध प्रकार से मनाया जाता है। आंध्र में पोष माह की पूर्णिमा से दो दिन पहले ही यह त्यौहार प्रारम्भ हो जाता है। रांगोली से गृह-आंगन सजाकर गाय के गोबर की टिकियां तैयार की जाती हैं जो नीचे से (ऊपर की अपेक्षा) अधिक चौड़ी होती हैं। ये टिकियां गौरम्मा कहलाती हैं। इनमें हिन्ताल की टहनियां तथा घास के तिनके लगाये जाते हैं। हल्दी तथा सिन्दूर लगाकर ये घर के आंगन तथा देहलियों में रख दिये जाते हैं।

पंजाब में यह त्यौहार लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। महाराष्ट्र में तिल-वस्तुओं के साथ-साथ चावल-आटा घी-शक्कर की बहत-सी चीजें बनाई जाती हैं। बंगाल में औरतें दूर्वांकुर लेकर अनाज के बर्तनों को बांधती हैं और बावन गुने अनाज की वृद्धि की कामना करती हैं। असम में माघ बिहु के नाम से यह त्यौहार बड़ा प्रसिद्ध है। राजस्थान में इस दिन गायों के लिए घास के हेरने खुलवाये जाते हैं तथा मांगने वालों को फटे-पुराने कपड़ेलत्ते, मुट्ठी-मुट्ठी अनाज और तिल-लड्डू दिये जाते हैं।

संकरातड़ें बनाना :

आन्ध्र के गौरम्मों की भांति राजस्थान में भी महिलाएं प्रात: पूजन का थाल सजाकर अपने-अपने घरों के बाहर गोबर के भांति भांति के संकरातड़ें बनाकर उनकी पूजा करती हैं। इन्हें खीचड़े की धूप देती है और कंकू, लच्छे, मेंहदी से इनका श्रृंगार करती हैं। इन संकरातड़ों में चूड़ियों द्वारा गोल-गोल चट्टे बनाये जाते हैं और उनमें अंगूठी से अंगुलियों के निशान दिये जाते हैं। अंगुलियों की सहायता से इन पर गोल घुमावदार लकीरें दी जाती हैं। दोनों हाथों की मुट्ठियां मिलाकर गाय, बैल व बकरी के खुर बनाकर अंगूठे से इनके आस-पास छोटे-छोटे पान बनाये जाते हैं और बारीक-बारीक थापे दिये जाते हैं।

अपनी पूजा पूरी कर औरतें किसी छाबड़ी में फल-फूल तथा सब्जी आदि भरकर लुटाती हैं जिसे बाड़ी लुटाना कहते हैं। इसी प्रकार कुम्हार के वहां जाकर बर्तन लुटाती हैं, जिसे उनका अवाड़ा लुटाना कहते हैं।

संध्या को मां-बेटी घर से रूठ जाने का बहाना कर किसी मंदिर, तालाब अथवा कुए पर चली जाती हैं। पीछे से बहू उन्हें ढूंढ़ने निकलती है और उन्हें नई पोशाक पहनाकर घर लाती है। ऐसे कई आनुष्ठानिक टोटके हैं।

संक्रान्ति व्रत :

संक्रान्त पर कई व्रत औरतों द्वारा पूरे जाते हैं। ये व्रत 6-7 संक्रान्त तक जाकर पूर्ण किये जा सकते हैं। कुछ व्रत इस प्रकार हैं - मूलों की बाड़ी में जाकर उन्हें 'कापड़ा' ओढ़ा आना, तालाब से नहाकर आते वक्त घाट पर 'कापड़ा' रख आना, तैली के घर जाकर उसकी घानी को कापड़ा ओढ़ाना, भर्‌यो डंगोर्‌यो व्रत के रूप में पानी भरे कलश में नारियल डालना, बाद में देवर द्वारा उसकी चटकें खाना, 'बरता मुंडे डोकाई' के रूप में जलते चूल्हे में गन्ने की पंगोरी डालना जिसे देवर द्वारा बाहर निकालना, 'घट्‌टी ऊंकरा समराया' के रूप में घट्‌टी के थाले अथवा ऊंखल में एक धोबा गेहूं डालना, 'सुई कोया समराया' के रूप में डोरा लपेटा कोया में सुई लगाना, कपास बिखेर कर किसी ब्राह्मण को देना, पड़ोसी के घर जाकर दीप जलाना, सासू के धोक देकर रुपया कांचली देना, ननद के मींडियां लेना तथा आंखों में काजल डालकर कांचली देना, कंडों का झाला लाती औरत के कंडों पर 'कापड़ा' ओढ़ाना, संकरात्या कराने के रूप में ननद भानजी से गोबर थेपाकर उन्हें कापड़ा देना, सूती सेज लगाने के रूप में सोते हुए भाई-भौजाई को जगाकर भाई को रुपया नारियल व भोजाई को कांचली कापड़ा देना, गरीब औरत को मुठ्‌या पहनाना आदि।

बच्चों के दड़ी-डोटी खेल :

बच्चों के लिए भी इस त्यौहार का विशेष महत्त्व है। इन दिनों बच्चे गेंद-गेड़ियों के कई खेल खेलते हुए देखे जाते हैं। कपड़े की बनी सुन्दर-सुन्दर गेंदें रंग-बिरंगे धागों को आंटियों से अंटाई जाती हैं। गेंदों से मारदड़ी, दाजण्यो, ठोयादड़ी, पड़ापाडन्यो, घोड़ी चड़न्यो जैसे खेलों की बहार छाई रहती है। रात्रि को खेले जाने वाले ठोयादड़ी के खेल में

एक बड़ी दड़ी जलती हुई एक लकड़ी के बड़े गेड़िये से खेली जाती है। इसमें दो दल होते हैं। अंधेरे में तब जलती गेंद ऐसी लगती है जैसे आग का गोला खेला जा रहा हो।

मकर संक्रान्ति को धेनु संक्रान्ति तथा कृष्माण्ड संक्रान्ति भी कहते हैं। यह दिन रावण के दिन से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि रावण जब मृत्यु को प्राप्त हो रहा था तब उसने भगवान से कुछ देने को कहा। भगवान ने कहा कि आज के दिन जो भी धर्म करेगा उसका पुण्य तुम्हें मिलेगा। यह दिन संक्रान्त का ही था अत: इस दिन का कुछ पुण्य रावण को प्राप्त होता है। इसी प्रकार के कई एक व्रत हैं जो सक्रान्त का समय देखकर पूर्ण किये जाते हैं। इन व्रतों के पीछे चाहे कोई कथा हो या नहीं परन्तु उन्हें पूर्ण करना हर औरत अपना पवित्र कर्त्तव्य समझती है।

दु:ख इस बात का है कि आज के इस युग में इस प्रकार की प्रथाएं एवं स्वस्थ परम्पराएं तथा रीति नीतियां हैं उन्हें उसी रूप में जीवित एवं जागृत रखने की आवश्यकता है। उनमें ही तो हमारी संस्कृति और सभ्यता के अनेक सेतु निहित है। यदि ये परम्पराएं हमारे द्वारा ओझल हो जायेंगी तो ऐसा समय भी आ सकता है जब हम अपनी सुनहली सभ्यता और शानदार संस्कृति से हाथ धो बैठें।

हर वर्ष नये बनकर आने वाले

हर वर्ष नये बनकर
आने वाले तुम्हीं हो
केवल तुम्हीं।
तुम्हारा भाग्य
किसी अदृश्य के हाथ नहीं है
अपनी मुट्ठी में अपना भाग्य
मुट्ठी बंद हो या कि खुली।
पूरा वर्ष जीते हो
बहादुरी से
एक से अनेक
अन्तहीन घटनाचक्रों का
सिलसिला समेटते हुए
इतिहास हो जाते हो।
हम सब भी इतिहास होना चाहते हैं
किन्तु
कभी इति हो जाते हैं
और कभी हास पर
हाशिया अटक जाता है।
अतीत कहां व्यतीत होता है?
वह वर्तमान और भविष्य
सबको रफ्फू किये रहता है।
तुम गहरे अजीब हो
दिन महिने वर्ष और युग युगान्त
काल की पतंग को
अपने माझे में बांधे उड़ाते हो
पतंग की तरह।
तुम पहाड़ हो याकि हाड़
रेत हो या कि प्रेत
ततैया हो याकि पपैया
यह सब आउटलुक है।
भीतर एक अघोरी है
जो देख रहा है मनु की तरह
साहित्य सृष्टि और समय के
सवालों तथा सरोकारों को
तुम उसी तरह धपाते हो
जैसे नये सकोरे में
पानी डालते ही
वायुमान ध्वनित हो उठता है।
सृष्टि के शेष
अशेष विशेष में
अपने गीतों को
पिनारे की रूई सी धुनकी दिये
नब्बे पार अपार हो रहे हो, होते रहो।
मुझे खुशी है
एक विशाल समन्दर की तरह
सीप के मोती बन
तुम सदैव अपनी अपरिमित ऊर्जा की
गूंज देते हुए
उन नद नालों सरवर थालों को भी
अपने जल-कमल से
पूरते रहो जो तुम्हारी
हेजों का हार पा
अपनी लहरों को राजहंस बना
इठलाने को उत्सुक रहते हैं।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

पोथीखाना

'बहुरूपी' एक बहु पठनीय पुस्तक

श्री विजय वर्मा सुविचारित गम्भीर अध्येता हैं। वे जितना भी लिखते हैं पूरी जिम्मेदारी, होशियारी, जतन, पड़ताल, तैयारी और ताकत से लिखते हैं। उनकी रूचि विविध व्यापी है। लम्बे समय तक भारतीय प्रशासनिक सेवा में रहते भी उन्होंने सतरंगी कला-संस्कृति से लेकर रागमाला चित्र, मन्दिरों में कामचित्रण, किताबें और उनका भविष्य, मृणमूर्तिकला, पद्म अलंकरणों की पड़ताल, जलजीवन, फिल्म-संगीत जैसे विषयों पर अपनी नेक तथा नेकी नजर डालकर उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाया है।

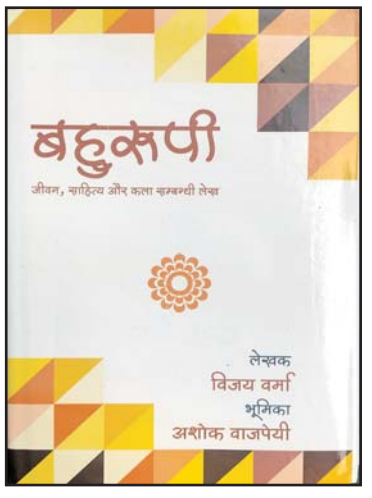

प्रस्तुत 'बहुरूपी' पुस्तक में ऐसे ही उनके जीवन, साहित्य और कला सम्बन्धी 25 लेख हैं। भूमिका में अशोक वाजपेयी लिखते हैं- ''पिछली अर्ध सदी में ऐसे प्रशासक कम हुए हैं जिनकी सुरूचि इतनी विविध हो और जो अतीत और वर्तमान के साथ भविष्य की भी ऐसी साफ-सुथरी समझ रखते हों।''

पुस्तक के प्रारम्भ में लेखकीय में वर्माजी लिखते हैं- ''इस संग्रह की विषयवस्तु में शास्त्र और लोक दोनों की उपस्थिति है। असल में दोनों को अलग करके देखने की दृष्टि ही गलत है।

इस एकांगिकता का एक नुकसान तो हम शहरवासियों को यह हुआ कि सारी सहजता, अकृत्रिमता और नैसर्गिक रचनात्मकता के साथ, लोक हमारे लिए बेगाना-सा हो गया है। इसका एक उदाहरण यह है कि मुहावरों और कहावतों के उस अकूत खजाने से, जिससे लोक सम्पन्न है, हम महरूम हो गये हैं। यह दु:खद है कि कुछ तो शहरों की देखादेखी और कुछ कालगति के कारण हमारा लोक सिमटता-मिटता, भदूकरा होता जाता है।'' (पृष्ठ 15)

यहां वर्माजी के लिखे कुछ लेखों में से वे अंश दिये जा रहे हैं जो सहज ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं-

(1) फिल्मों में दोयम दर्जे के संगीत से काम चलाया जा रहा है। मीडिया नयी प्रतिभाओं को सामने लाने का कार्य बेहतर तरीके से कर सकता है लेकिन जब अधकचरे संगीत तथा संगीतकारों को ही बढ़ावा और प्रश्रय मिलेगा तो उसके भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगना स्वाभाविक है। -(सुर की दुनिया कितनी सुर में)

(2) शिल्प पारम्परिक रखते हुए भी कथ्य आधुनिक हो सकता है लेकिन राधेश्यामजी का कथ्य भी पारम्परिक ही था और व्यावसायिक सफलता के लिए दैवीय चमत्कार इत्यादि के उपयोग से उन्हें कोई गुरेज नहीं था। प्रेमचन्दजी ने जब उनसे पूछा तो वे बोले- ईश्वर भक्ति व्यावसायिक कम्पनी का नाटक है, फेल हो जाय तो कम्पनी ही फेल हो जाय। नब्बे फीसदी पैसा हमें उसी जनता से मिलता है जो चमत्कार पर ही घायल होकर तालियां बजाती हैं।
-(आधुनिक हिन्दी नाटक का उद्भव, पृष्ठ 42)

(3) देश को सुरक्षित रखना है तो पुस्तक संस्कृति को जीवित रखिये। इसके लिए लेखक के निम्नांकित सुझाव हैं-

(अ) सरकारें पूरे व्यापार, उसकी कठिनाइयों और विकृतियों की जांच करवाये। उस पर नजर रखने के लिए एक तंत्र बनाये।

(ब) हर राज्य में लगभग 250 महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की सूची बनाये। अनुकूल अनुदान देकर सस्ते पेपरबेक संस्करण उपलब्ध कराये।

(स) बड़ेरों की स्मृति में पुस्तकमालाएं निकलवाने के लिए समृद्धजनों को प्रवृत्त किया जाय।

(द) उपहार में पुस्तक दी जाय। मंहगे भड़कीले निमंत्रण पत्रों तथा शुभकामना कार्डों की बजाय पुस्तक के साथ सादा निमंत्रण, बधाई सन्देश भेजा जाय।

(य) पुस्तकालय की स्थिति में सुधार किया जाय।

-(क्या होगा पुस्तक का भविष्य, पृष्ठ 154)

(4) कामचित्रण अपने आपमें सामान्य चीज रहा है। लोकजीवन, लोककला, लोकसंगीत व लोकगाथा में काम खुले और सहज ढंग से लिया जाता रहा है। न तो धर्म के साथ यौन का जुड़ाव विचित्र है और न विभिन्न धार्मिक और गैर धार्मिक उद्देश्यों के लिए काम चित्रण। चित्रकला और शिल्प दोनों के लिए ये विषय वैसे ही आम रहे हैं। मन्दिरों में कामचित्रण किसी एक धर्म या सम्प्रदाय से ही जुड़ा हुआ नहीं है और न किसी प्रदेश तक सीमित।

-(मन्दिरों में काम चित्रण, पृष्ठ 61-62)

इस प्रकार श्री विजय वर्मा जिस विषय को उठाते हैं उसका पूरी गवेषणा के साथ प्रतिपादन करते हैं। अनेक ग्रन्थों और विद्वानों का हवाला देते, अपना निजी मंतव्य प्रस्तुत करते हैं। आवश्यकतानुसार उसके निष्कर्ष भी देते हैं। सुझाव भी रखते हैं और बिना किसी पक्षपात के स्पष्ट तौर पर चुटकी चूंटकी देते हैं।

- म. भा.

मुनि मनितप्रभसागर की तीन प्रवचन पोथियां

'वचनों में चारित्र की आभा नहीं होती पर प्रवचन आचरण की प्रभा से दैदीप्यमान होते हैं। उस मुनि को प्रवचन कुशल कहा गया है, जो सूत्र व अर्थ के प्रतिपादन में पटु है, जो नय व भंगों से गहन, दुर्द्धर प्रवचन को धारण करता है। उसे पुनः-पुनः परिवर्तित करता है। जो वाचना देने में कुशल है तथा प्रवचन का अहित करने वालों का निग्रह करने में समर्थ है। आत्मांजनम्, नेत्रांजनम् व हृदयांजनम् मानो तीन निर्मल नदियों का पावन संगम है। इसमें रत्नत्रयी की चमक एवं तत्त्वत्रयी की सुगंध है।

जैन मुनि प्राय: पद विहार करते हैं। इस दौरान ग्रामानुग्राम विचरण करते वे लाखोंलाख जनसमुदाय को अपने सदुपदेश प्रवचन द्वारा मानव कल्याण की सीख देते हैं। ये मुनि गृहस्थ नहीं होकर संन्यासी होते हैं। किसी-न-किसी घटना-प्रसंग से ये बालपन में ही विरागी होकर वीतराग का मार्ग पकड़ अपने धर्मगुरु द्वारा परिजनों की सहमति से दीक्षित हो जाते हैं।

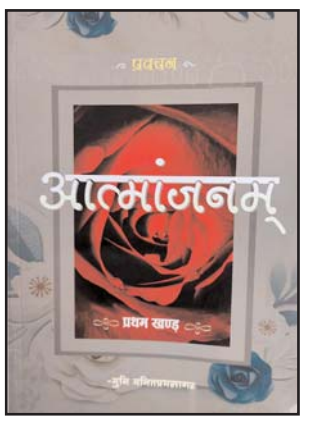

चातुर्मासकाल में ये वर्षावास करते स्थिरवास हुए आत्मकल्याण के साथ जनकल्याण की तपाराधना का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस हेतु प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों, तीर्थंकरों, धर्माचार्यों आदि द्वारा भाषित वाणियों के माध्यम से प्रवचन देते हैं।

ऐसे ही खरतरगच्छीय आचार्य जिनमणिप्रभसागरसूरि से दीक्षित मुनि मनितप्रभसागर के प्रवचनों के तीन खण्ड, आत्मांजनम्, नेत्रांजनम् तथा हृदयांजनम् नाम से श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मन्दिर, मांडवला (जालोर, राजस्थान) ने प्रकाशित किये हैं। आमधर्मी बंधु इन प्रवचनों का लाभ ले सकें इसलिए प्रत्येक का मूल्य मात्र 50 रूपये ही रखा गया है।

इन प्रवचनों के सम्बन्ध में लेखक स्वयं का कथन द्रष्टव्य है। वे लिखते हैं- 'वचनों में चारित्र की आभा नहीं होती पर प्रवचन आचरण की प्रभा से दैदीप्यमान होते हैं। परमात्मा पहले आचरण करते हैं, तदुपरान्त बोलते हैं, अत: उनके वाक्य प्रवचन बन जाते हैं।

उनका मौन आचरण ही मुखर प्रवचनों का रूप धारण करता है। उस मुनि को प्रवचन कुशल कहा गया है, जो सूत्र व अर्थ के प्रतिपादन में पटु है, जो नय व भंगों से गहन, दुर्द्धर प्रवचन को धारण करता है। उसे पुन:-पुन: परिवर्तित करता है। जो वाचना देने में कुशल है तथा प्रवचन का अहित करने वालों का निग्रह करने में समर्थ है।

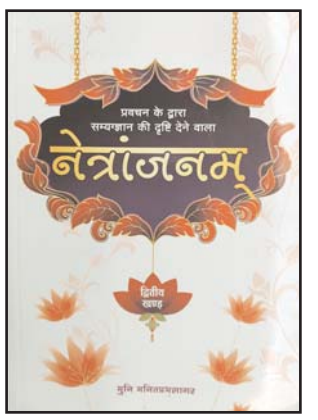

आत्मांजनम्, नेत्रांजनम् व हृदयांजनम् मानो तीन निर्मल नदियों का पावन संगम है। इसमें रत्नत्रयी की चमक एवं तत्त्वत्रयी की सुगंध है। प्रथम खण्ड में पर्व, 18 पाप स्थानक आलोचना, श्रावकचर्या, नरक की भाव-यात्रा, विविध भाव-यात्राएं, प्रभु प्रीत-भक्ति, पर्युषण आदि विषयों का समावेश है।

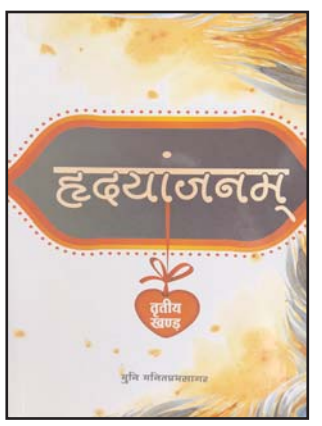

द्वितीय खण्ड में नवपद, परिवार, जीवन-कला, प्रवचन-माता, दीपावली पर्व, 22 परीषह, आत्म-साधना और दादा-गुरुदेव से सम्बन्धित विषयों को लिया गया है। तृतीय खण्ड में जिनवाणी, ज्ञान की महिमा, समय की मूल्यवत्ता, परमात्मा महावीर की जीवनशैली आदि से जुड़े विषयों को उपस्थित किया गया है।

-डॉ. कहानी भानावत

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली शिक्षा हो : राज्यपाल

राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने 20 दिसम्बर को महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कहा कि दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों के लिए नए जीवन में प्रवेश का पर्व है जिससे वे अपने अर्जित ज्ञान का समाज और राष्ट्र के हित में उपयोग के लिए तैयार होते हैं। समारोह में विशिष्ट अतिथि कृषिमंत्री लालचंद कटारिया, डॉ. ए.पी.जे.ए. कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ के पूर्व कुलपति डॉ दुर्गसिंह चौहान ने दीक्षांत उद्बोधन दिया।

कुलपति डॉ. नरेंद्रसिंह राठौड़ ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते कहा कि विश्वविद्यालय ने स्वयं का ऑनलाइन परीक्षा तंत्र विकसित किया है। लॉकडाउन के समय 400 से अधिक ई-मैन्युअल व ई-कम्पेंडियम के सृजन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हिन्दी व अंग्रजी दोनों भाषा में छपी डिग्री पर विद्यार्थी का रंगीन फोटो, क्यूआर कोड इत्यादि अनेक सुरक्षा उपाय भी किये गये हैं। परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनील इंटोदिया ने बताया कि समारोह में 938 उपाधियाँ प्रदान की गयी, जिनमें कृषि, इंजीनियरिंग, सामुदायिक विज्ञान, खाद्य एवं आहारिकी, डेयरी टेक्नोलॉजी व मात्स्यकी संकाय में 706 स्नातक, 150 स्नातकोत्तर व 82 विद्या-वाचस्पति की उपाधियां हैं। इसमें स्नातक स्तर पर सभी संकायों में कुल 13 स्वर्ण पदक, स्नातकोत्तर स्तर पर 16 व पीएचडी स्तर पर 5 एवं जैन इरिगेशन द्वारा इंजीनियरिंग संकाय के 2 छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए।

दीक्षांत समारोह गौरवशाली क्षण :

इसी प्रकार 22 दिसम्बर को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के 29वें दीक्षांत समारोह में राज्यपाल मिश्र ने कहा कि दीक्षांत समारोह शिक्षा जगत का सर्वाधिक गौरवशाली क्षण होता है। विद्यार्थी के जीवन का यह ऐसा महत्त्वपूर्ण अवसर है जब सीखे हुए ज्ञान की पूर्णता के उपरान्त अब उसे व्यावहारिक जीवन में उतारने के लिए स्वयं को प्रस्तुत करना होता है। मैं चाहता हूँ, यहाँ से दीक्षित विद्यार्थी जीवन के हर मोड़ और पड़ाव पर समस्त चुनौतियों का सामना करते हुए लोक कल्याण के लिए अपने ज्ञान और सर्वोपरि क्षमताओं को समर्पित करे।

विशिष्ट अतिथि उच्चशिक्षामंत्री राजेंद्रसिंह यादव ने कहा कि प्रारंभिक शिक्षा जितनी महत्त्वपूर्ण होती है उतनी ही महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयी शिक्षा भी होती है। यही हमारे जीवन की दिशा और दशा का निर्धारण करती है। यूएसए के सलाहकार डॉ. फ्रैंक एफ. इस्लाम ने दीक्षांत उद्बोधन दिया। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के महानिदेशक प्रो. बलराम भार्गव ने भारत को संभावनाओं और आशाओ का देश बताया। कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए जानकारी दी कि समारोह में कुल 105 स्वर्ण पदक में 51 छात्राओं ने गोल्ड मेडल तथा 8 को चांसलर मेडल मिले। इसके अलावा 89 को विश्वविद्यालय स्वर्ण पदक, 8 विद्यार्थियों को प्रायोजित मेडल प्रदान तथा 180 पीएचडी उपाधि धारकों को डिग्री प्रदान की गई।

- डॉ. तुक्तक भानावत

स्मृतियों के शिखर (134) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पशुओं में सर्वाधिक पूजित घोड़ादेव

राजस्थान की वीर भूमि में जितने भी योद्धा हुए हैं उनकी बहादुरी और कौशल का श्रेय उनके घोड़ों के साथ अधिक जुड़ा है। राणा प्रताप के साथ तो उनके घोड़े चेटक का भी उतना ही नाम है। मनुष्यों में जैसे कई जात है, घोड़ों में भी कई जात और पहचान है। रंगों की दृष्टि से भी कोई कत्थई, कोई सिन्दूरी, कोई लाल, कोई काला, कोई सफेद, कोई चितकबरा, कोई दुरंगा तिरंगा और ऐसी ही उनकी प्रकृति और गुण मिलेंगे।

इस दृष्टि से देखें तो पड़चित्रण में विविध रंग-रूप के घोड़े-घोड़ी मिलेंगे। सबसे लम्बे देवनारायण के चित्रपट में ही देवनारायण के बड़े भाई मेंदू, काका नीया रावत तथा नामदे पड़िहार का नौलखा नाम का करमच्या घोड़ा, बहाराव की काली टपकी वाली सिन्दूरी रंग वाली बोहर घोड़ी, रावजी का लाल रंग का गंगाजल घोड़ा, देवनारायण का नीलागर नामक नीला घोड़ा, रामदेवजी का सफेद हेमर घोड़ा, नीमदे पड़िहार का पीला बांडा घोड़ा, भूणाजी तथा जगदेव पुंवार का करमच्या घोड़ा तथा रावत भोज की लाल रंग की बूंली घोड़ी प्रसिद्ध रही है। ऐसे ही विविध रंग वाले झग्गों में ये सवार शोभित हैं।

जितने भी लोकदेवता हुए हैं, उनके वाहन भी घोड़े ही सर्वाधिक रहे हैं। यही कारण है कि कई देवताओं की पहचान उनके घोड़े बने हुए हैं। ये घोड़े भी असाधारण और देवगुणों से युक्त रहे। प्रताप का चेटक भी ऐसा ही था। दोनों का जन्म भी एक ही दिन हुआ था। रामदेवजी का रेवंत, देवनारायण का नीलकरण घोड़ा इतिहास और जनजीवन में बड़ा मान पाया हुआ है।

मामादेव, गोगाजी, कल्लाजी राठौड़ जैसे लोकदेवताओं का तो घोड़ा ही एकमात्र सहारा था। अपने प्राणों से भी अधिक प्यार वे अपने घोड़े को देते थे। घोड़े भी अपने स्वामी के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देते यही कारण है कि इन देवताओं के साथ-साथ उनके घोड़े भी देवता के रूप में पूजे जाने लगे। ये देव घोड़ादेव के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका एक नाम घोड़ा बावसी भी मिलता है जो जनजातियों में अधिक प्रचलित है।

कही ये घोड़ादेव देवरों में प्रतिष्ठित किए जाते हैं। कहीं विशेष तिथि पर इन्हें घर-घर घुमाया जाता है। कहीं दीवाली पर इनका अंकन किया जाजा है। कहीं रात्रि जागरण दिया जाता है। स्वामी से भी ज्यादा मान घोड़ों का किया जाता है और मनौती बोली जाती है।

भाद्र कृष्णा नवमी, गोगा नवमी को मारवाड़ में घर की दीवालों पर गोगा-घोड़ा मांडा जाता है। यह घोड़ा हरिये गोबर से रेखांकित जाता है। कहीं घरों में मिट्टी का घोड़ा पूजा जाता है। कुम्हार के घर जाकर भी महिलाएं घोड़ा पूजती हैं और रक्षाबंधन पर बंधी राखियां खोलकर घोड़े के चरणों में रखती हैं।

मेवाड़ की ओर कुम्हार स्वयं मिट्टी का घोड़ा लिए घर-घर फेरी लगाता है। कोई घोड़े को दही चढ़ाता है तो कोई घी। कोई उसे दूब कपड़ा ओढाकर आस्था व्यक्त करता है।

राजस्थान के विभिन्न अंचलों में घोड़ादेव की परम्परा भिन्न-भिन्न है। रामदेवजी के भक्त मनौती पूरी होने पर कपड़े के बने घोड़े चढ़ाते हैं। ये घोड़े छोटे से छोटे अंगुली भर से लेकर पांच-पांच फीट तक के होते हैं। आदिवासी क्षेत्रों में पांच-पांच सात-सात घोड़े तक चढ़ाए जाते हैं। इनमें कहीं कल्लाजी राठौड़ के नाम से, कहीं पादरमाता के नाम से तो कहीं मामादेव के नाम से चढ़ाए जाते हैं। दीवाली पर ये अधिक चढ़ाए जाते हैं।

गरासियों में तो घोड़ा बावसी की मानता बड़ी जोरों की देखने को मिली। उनकी भाखरपट्टा बस्ती में एक चबूतरे पर इतने घोड़े चढ़े हुए हैं कि आश्चर्यचकित होना पड़ता है। घोड़े पुराने होने अथवा खंडित होने पर वहां से हटा लिए जाते हैं पर उन्हें कहीं फैंका नहीं जाता है। किसी वृक्ष के पास अथवा उसी देवस्थान के पीछे एकत्र कर लिया जाता है फिर उन्हें छूता भी कोई नहीं है।

सिरोही क्षेत्र में विपदा आने पर कोई जन मामाजी के थानक पर घोड़ा चढ़ा आता है। इससे उसका दुःख जाता रहता है। इधर कालण्डी के पास करोड़िया थानक पर चार-चार फीट तक के घोड़े चढ़े मिलते हैं। कुशलगढ़ की ओर वगांचादेव के नाम पर घोड़े चढ़ाए जाते हैं। खड़िया भीलों में इनकी अधिक मानता है।

घोड़ा-पूजा की परम्परा राजस्थान में ही हो, ऐसी बात नहीं है। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, मिथिला, नेपाल आदि दूर-सुदूर प्रदेशों में भी इसकी विशिष्ट मान्यता है।

मिथिलांचल में लोकदेवता बरहम बाबा को घोड़ा चढ़ाया जाता है। इस घोड़ को भगत लोग बरहम का घोड़ा कहते हैं। इधर धनपाल, रणपाल, नरसिंह, राहु, सलहेस, लौरिक आदि के वाहन भी घोड़े ही स्वीकारे गए हैं। राजवंशियों में सूरज ठाकुर व नदीलाल को भी उनका प्रिय वाहन घोड़ा चढ़ाया जाता है। यह फुलघोड़ा के नाम से अधिक जाना जाता है।

उत्तरप्रदेश में दशहरे पर राजपूत ठाकुर परिवारों में स्त्रियां घोड़ीपूजन में बड़ी निष्ठा रखती हैं। घोड़ीवान इनके घरों में घोड़ी लेकर जाता है तब सौलह सणगार से युक्त नारी घोड़ी-पूजा कर इनाम देती है।

महाराष्ट्र के आदिवासियों में घोड़े के प्रति अटूट आस्था और ममत्व का ही प्रताप है कि उनके घरों में जो चित्रकारी की जाती है वह शक्ति के प्रतीक घोड़े की प्रमुखता लिए रहती है। बीचोंबीच एक बड़ा घोड़ा और उसके आसपास अन्य घोड़े तथा वीर चितराये जाते हैं। गुजरात के आदिवासियों में यह चित्रकारी अधिक चटकीले रंग लिए होगी। इधर घोड़े पूर्ण शक्तिपरक और मानवाकृतियों के अपेक्षाकृत विशिष्ट और विराट रूप लिए मिलेंगे।

कुम्हार द्वारा माटी के चाक पर उतारे जाकर इन घोड़ों को विशेष रूप-स्वरूप दिया जाता है और फिर उन्हें पकाया जाता है।

सामंतीकाल में राजदरबार द्वारा विशेष उत्सव खासकर गणगौर, खेजड़ी पूजन, तीज जैसे अवसरों पर जो सवारियां निकलतीं उनमें घोड़ों का आकर्षण ही विशेष रूप से देखा जाता। ये घोड़े सोने तथा चांदी के गहनों से सजे रहते।

घोड़े भी एक-से-एक बढ़कर होते। बड़े, अच्छे और ऊंची कदकाठी के तन्दुरस्त घोड़े जिनका रंग सफेद होता वे आगे-ही-आगे रहते। उनके पीछे अन्य रंग के घोड़े होते। आगेवान मुख्य घोड़े के दोनों ओर दो चंवर ढोरने वाले होते। यह घोड़ा बड़े ठुमके से शाही अन्दाज लिये होले-होले चलता। बाजवक्त उसे दोनों ओर दो चरवादार रक्षक लगाम पकड़े चलते। इन पर कोई सवार नहीं होता।

कीमती जेवरों से घोड़ों के मोहरें, अग्रभाग, पृष्ठभाग तथा पांव आदि शोभित होते। यहां तक कि पांवों में बांधे जाने वाले घुंघरू तक सोने अथवा चांदी के होते। आगे-ही-आगे बैण्ड वाले होते जो विविध प्रकार के बाजों से बड़ी ही मोहक और सुरीली धुनें निकालते छविमान होते। कहीं-कहीं गायिकाएं विविध गीतों में सुर लिये स्वर लहरियां बिखेरती और पातरनियां नाचती चार चांद लगातीं।

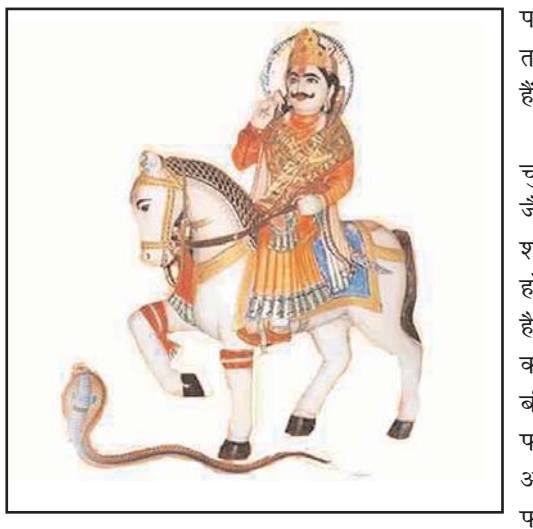

मेवाड़ राजघराने के घोड़े तो प्रारम्भ से ही अति ख्यात रहे हैं। इनमें से ऐसे घोड़ों का उल्लेख भी लोकजीवन में मिलता है कि जो देवघोड़े थे यानी वे लोकदेवताओं द्वारा दिये गये थे इसलिए बड़े-से-बड़े युद्ध में भी वे सदैव विजयी रहे। उन्हें कभी भी पराजय का मुंह नहीं देखना पड़ा। यहां के राजवंश में ऐसे घोड़े अभी भी पल रहे हैं जो प्रत्येक माह की ग्यारस अर्थात् एकादशी को निराहार रहते हैं। ऐसे घोड़े ग्यारसी घोड़े कहलाते हैं।

ऐसे घोड़े भी हैं जिन पर कोई सवारी नहीं करता। वे घोड़े भगवान एकलिंगनाथ तथा कुलदेवी की सवारी के लिए हैं। एक घोड़ा तो यहां चेटक की प्रजाति का भी है जिसकी हर समय विशेष रूप से देखभाल की जाती है। ऐसे वफादार तथा विश्वसनीय घोड़े होते हैं जो अपने स्वामी के अलावा किसी अन्य को अपनी पीठ पर सवार के रूप में स्वीकार नहीं करते। हल्दीघाटी रणक्षेत्र में तो महाराणा प्रताप ने चेटक की समाधि भी बनवाई जिसकी प्रतिदिन पूजा की जाती है।

ऐसा नहीं है कि राजस्थान में ही घोड़ा देवरूप में पूजित, प्रतिष्ठित और पुण्यशाली माना गया है। अन्य प्रान्तों में भी घोड़ा देवरूप में शक्तिशाली वाहक के रूप में मान्य प्रतिष्ठा पाये है। शक्तिवंत देव ही नहीं, शक्ति स्वरूपा देवियों में भी घोड़ा उनके वाहन के रूप में लोकप्रियता लिये है।

लौकिक रूप में स्थानीय देव और वीर ही नहीं, देवियां और वीरांगनाएं भी अपने साथ अपने घोड़ों पर सवारी किये मिलते हैं। इनमें से कई पौराणिक भी हैं। इनमें अम्बाजी, कालिका, खोड़ीयार, बहुचरा, दुर्गा, आशापुरी, हिंगलाज, सिकोतरी, शीतला, वेराई, उन्ताई, खामलाई, मस्की, देवलमारी, भादरवा माता नामी देवियां तथा गोपालदेव, बछड़ा दादा, करीआ बाबा, काथुजी आदि देशज संस्कृति के प्रतिनिधि के रूप में जनास्था के श्रद्धाभाव लिये हैं।

इनकी शरण में जाये बिना कोई काम पूरा नहीं होता। प्रत्येक संस्कार, प्रत्येक वार-त्यौहार, उत्सव-अनुष्ठान पर इनकी उपस्थिति से ही सारे कार्य सम्पादित होते हैं। हर काम को ये ही निर्विघ्न सम्पन्न करते हैं। हर समय इनकी कृपा ही आनन्द-मंगल की सृष्टि किये रहती है और हर दुःख कठिनाई और मुश्किल में ये ही नैय्या पार कर तारणहार बनते हैं।

भूत, प्रेत, चुड़ैल, डाकण जैसी नुगरी शक्तियां हावी होने, चेचक, हैजा, ज्वर, कोरोना जैसी बीमारियों के फैलने, आगजनी, बाढ़, फसल खराबा जैसी आपदाओं से बचने या फिर वन्ध्यत्व से मुक्ति पाने के लिए मिट्टी के घोड़े चढ़ाने की मनौती बोली जाती है और इनसे छुटकारा होने पर बोलमा पूर्ण करने को घोड़े चढ़ाये जाते हैं। ऐसे घोड़ों के चढ़ावों के ढेर लग जायेंगे।

किसी पर्व, उत्सव या त्यौहार के आने पर उस दिन देवता के प्रतिनिधि भोपा, ओझा याकि भूवा के पास जाकर पूजास्थल मन्दर, देवरा जाकर विधिवत पूजा-अर्चना एवं पैवेद्य चढ़ा, नारियल का चढ़ावा कर अथवा उसकी धूप देकर, चुनरी ओढ़ाने की रस्म पूरी की जाती है।

ऐसे घोड़े-दर-घोड़े चढ़ते पूरा आंगन, चौक, चबूतरा ही घोड़ा देवों से जगमगाने लगता है। यह दृश्य ग्राम्य-संस्कृति, वहां के जनजीवन के संस्कारों तथा परम्परागत इतिहास एवं कलामय अभिरूचि का उत्तम दस्तावेज कहता प्रतीक होता है।

सूर्य का रथ सात घोड़े खींचते हैं। सात घोड़ों वाले चित्र मैंने कई जगह देखे जो सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने के साथ धनसंपदा तथा मंगल मांगल्य की वृद्धि करते हैं। विवाह पर तो दूल्हा घोड़े पर सवार होकर ही तोरण चटकाता है और तदनन्तर विवाह मण्डप में पहुंच फेरे लेता है। विवाह पर मुख्य द्वार पर जो भित्तिचित्राम अंकित कराये जाते हैं, उनमें सजाधजा घोड़ा प्रमुखता लिये होता है।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 जनवरी 2022

सम्पादकीय

समय का मौसम

समय और ग्राहक कह कर नहीं आता। यह कहावत बहुत पुरानी है। बड़ेरे कहते थे कि समय को कोई बांच नहीं पाया, जांच नहीं पाया। उसकी मरजी हो तो वह आने के पहले दस्तक दे और न हो तो बिना किसी आहट के आ धमके, टील्यो आयो टप्प की तरह।

समय की भाखणी करने के हमारे शास्त्र और लोक में कई तरीके हैं। टीपणा अर्थात् पंचांग तो है ही पर देव-देवरे भी देवता अपने प्रतिनिधि घोड़ले अर्थात् भोपे के माध्यम से दो टेपी भविष्यवाणी करते हैं। अब तो मौसम विज्ञानी भी आनेवाले समय की कथनी करते हैं पर लोग उस पर कम विश्वासी होते हैं। पिछले दो सालों का समय तो बड़ा ही उथलपुथल का रहा। पहले भी समय का मिजाज गेलसप्पा रहता था पर सब जगह नहीं। अब तो गजब ही ढहा दिया जब पूरी दुनियां में कोरोना का कहर देखने को मिला। ऐसा कहर शायद ही कभी कहीं देखने-सुनने में आया। इतिहास में ऐसा नहीं दर्ज हुआ कोई प्रसंग जब हमारे ही सामने देखते-देखते इतने कोरोना पीड़ित मृत्युगामी बने कि उन्हें जलाने की भी ठीक से जगह नहीं मिली। शव को लंबी प्रतीक्षा सूची में पड़े रहना पड़ा। परिवार के परिवार उजड़ गये।

सुना था कि हमारे यहां प्रलय तो हुए पर महाप्रलय कभी नहीं हुआ। सो समय की बलिहारी है। कौन जीत पाया समय को! वह जब भी करवट बदलता है, उसे कोई अन्य बलि पटकी नहीं दे सकता। इसीलिए कहते हैं, समय बड़ा बलवान। वैसे भी पहले की तरह दुकड्या नहीं रहा। अब कहने को छह ऋतुएं होती हैं। आधी तीन ही भारी लगती हैं। वे भी अपनी समयबद्धता को नहीं बांध पा रही हैं।

इन दिनों को ही लें। कड़ाके की सर्दी के दिनों में मावठे की बार-बार पधरावणी हो रही है। जो तालाब कभी इस मौसम में नहीं भरे वे भी ओटे-पे-ओटे देते डोटे खेले जा रहे हैं। इस होड़ाहोड़ी में बरसात में भी पूर नहीं देने वाले थबोले खाते बोल रहे हैं। कोई कहता है इससे अगली फसल को फायदा होगा तो कुछ कहते हैं पानी इकट्ठा होने से अगला वर्ष अच्छा निकलेगा पर यह भी कहते सुना कि ऐसे बिगड़ेल मौसम में मनख जमारो बगड़ जावै। मांदगी बढ़ जावै। जीव-जन्तु नी पांगरै। हाड़ कांपै नै राड़ झांपै।

सरकार के हाथ लंबे हैं, माना पर पांव तो छोटे ही हैं। दरोपदां के चीर माफक समस्या की सुरसा बढ़ती जाती है। पानी के पास रहकर भी बगुला कितना ही नहाये धोये मगर वह बगुला ही रहेगा, हंसा नहीं बन सकेगा। इसी प्रकार समय को कितना ही उचेलें, बांधें, टांडें, वश में करें वह पता नहीं, कब किस राह अपना रूप-सरूप बदल चकमा दे निकले, कुछ कहा नहीं जाता। उसे जकड़ में, पकड़ में लेने का कोई मुहावरा हम नहीं बना पाये। हरकत में बरकत है।

अरविन्दसिंह मेवाड़ ने पेलेस कैलेण्डर जारी किया

उदयपुर (वि.)। महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा प्रकाशित वार्षिक कैलेंडर वर्ष 2022 'उदयपुर संस्थापक मेवाड़ के 53वें श्रीएकलिंग दीवान महाराणा उदयसिंह' का विमोचन महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने किया। कैलेण्डर के अंत में महाराणा उदयसिंहजी के शासनकाल (ई.स. 1537 से 1572) में मेवाड़ में हुई ऐतिहासिक घटनाओं आदि से सम्बन्धित चित्र दर्शाए गये हैं साथ ही मेवाड़नाथ प्रभु श्रीएकलिंगनाथजी, वरदायक महर्षि हारीत राशि, मेवाड़ के मूल नरेश बापा रावल, गोस्वामी प्रेमगिरीजी महाराज तथा मुख्य में महाराणा उदयसिंहजी द्वितीय एवं उनके कालक्रम को दर्शाते ऐतिहासिक दृश्य दिये गये हैं।

ओब्सटेट्रिक्स स्किल्स एवं ड्रिल पर कार्यशाला

उदयपुर (वि.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग द्वारा 'ओब्सटेट्रिक्स स्किल्स एवं ड्रिल' पर कार्यशाला आयोजित की गई। विभागाध्यक्ष डॉ अरुण गुप्ता ने बताया कि कार्यशाला में उदयपुर के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों में अध्ययनरत 30 स्नात्कोत्तर विद्यार्थियों को विभिन्न ओब्सटेट्रिक इमरजेंसी के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यशाला में सीईओ प्रतीम तम्बोली, डीन डॉ नरेन्द्र मोगरा, मेडिकल सुप्रीटेनडेंट डॉ. सुनीता दशोत्तर उपस्थित थे। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किये गए।

कानोड़ मित्र मंडल का अमृत स्मरण एवं वार्षिक शुभ केसर सम्मान

उदयपुर। उदयपुर में निवासरत कानोड़वासियों के मैत्री संगठन कानोड़ मित्र मंडल का वार्षिक चुनाव तथा दीपावली मिलन समारोह शुभकेसर गार्डन में आयोजित किया गया।

इसमें सर्वसम्मति से हिमांशुराय नागोरी अध्यक्ष एवं दिलीपकुमार भानावत महामंत्री पद पर पुन: निर्वाचित हुए। इसके अलावा संजय अलावत कोषाध्यक्ष, जीवनसिंह पोखरना एवं कोमल वया उपाध्यक्ष, गिरिराज सोनी सह सचिव, अनिल पुरोहित सांस्कृतिक मंत्री, श्रीमती सरोज सोनी एवं श्रीमती गरिमा बाबेल सांस्कृतिक मंत्री महिला प्रकोष्ठ को चयनित किया गया। सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को ऋषभ भाणावत एवं सुंदरलाल अलावत ने पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

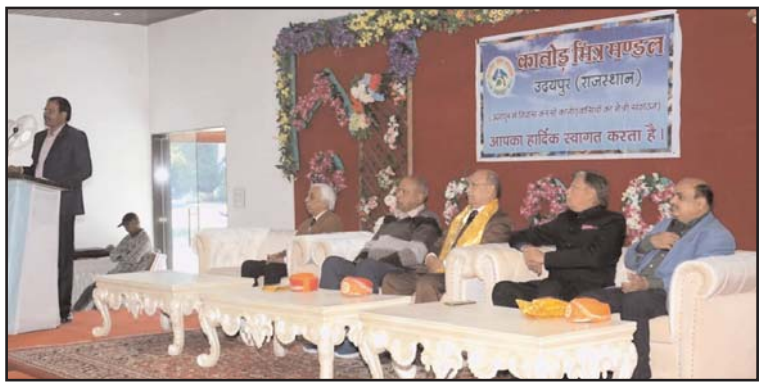

अपने उद्बोधन में मित्र मंडल के संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि मित्र मंडल की स्थापना का विचार तो सन् 1959-60 में ही मूर्त रूप ले चुका था। वह काल उसके शिलान्यास का था मगर उसकी तो शिलपट्टी बनी ही नहीं। उन्होंने उस समय के अपने साथियों का स्मरण किया और कहा कि आज की पीढ़ी तो उसके उद्घाटन वर्ष को ही ठीक से नहीं देख-समझ पाई। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि उसके बाद उदयपुर में रह रहे विविध गांवों के मित्र मंडल बने जो अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने कुछ सुझाव-बिन्दुओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया जो इस प्रकार थे-

(1) सभी सदस्यों की पारिवारिक सूचीपरक जेबी पुस्तिका का प्रकाशन हो।

(2) वरिष्ठजनों में 70 वर्ष पूर्ण किये का सम्मान करने के साथ 80, 90, 100 वर्षीय वरिष्ठतरों का सम्मान भी हो।

(3) द्वैमासिक बुलेटिन का प्रकाशन हो ताकि सदस्य परिवारों तथा मित्र मंडल की गति-प्रगति विषयक जानकारी दूर-सुदूर तक के मित्रों, शुभेच्छुओं तक पहुंचाई जा सके।

(4) प्रत्येक कार्यकारिणी अपने सत्र की स्मारिका का प्रकाशन करे ताकि उसमें छपित विज्ञापनों के माध्यम से मित्र मंडल की आय-शक्ति बढ़ाई जा सके।

(5) उदयपुर के बाहर देश के विविध अंचलों तथा विदेश में रह रहे कानोड़वासियों से सम्पर्क-सहयोग का सिलसिला प्रारम्भ हो जो एक सशक्त कड़ी की भूमिका निर्माण करे।

(6) कार्यकारिणी अपने दो वर्ष के सत्र में एकबार ही सही कानोड़ में मित्र मंडल का अधिवेशन, स्थानीय सहयोग से आयोजित करे।

(7) कानोड़ के समुन्नयन की दृष्टि से प्रमुख स्थलों को दर्शनीय बनाने के साथ-साथ सार्वजनिक हिताय के कार्य भी, जो जरूरी हों, कराने की चेष्टा करे।

(8) शैक्षणिक दृष्टि से छात्र-छात्राओं को विशेष शिक्षण-प्रशिक्षण दिलाने तथा जरूरतमंदों को आर्थिक सम्बल देने के क्षेत्र में प्राथमिक भूमिका निभाये।

(9) आधी आबादी अर्थात् महिला-शक्ति की समुचित भागीदारी के लिए महिला प्रमुखा जैसा कोई स्वतंत्र पद सृजित कर मत्र मंडल अपने साथ अलग से उसके दायित्व अथवा भूमिका पर सक्रिय मंथन करे।

(10) महत्त्वपूर्ण आयोजन पर अन्य ख्यातलब्ध व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाय।

(11) विविध तरह की प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रतिभा-प्रोत्साहन के कार्यक्रम आयोजित करने के साथ विशिष्ट उपलब्धिधारक महिला-पुरुषों का सम्मान किया जाय साथ ही उन्हें पुरस्कृत करने के लिए प्रायोजित सहकर्मी, संस्थान, संगठन तथा ट्रस्टों का जुड़ाव किया जाय।

(12) मित्र मंडल का अपना निजी भवन होना अति आवश्यक है इस हेतु विशिष्ट अभियान प्रारम्भ किया जाकर सरकारी एवं अन्य सहयोग-सूत्रों की तलाश की जाय।

(13) जो भी कार्य किये जाय समयबद्ध, विधान सम्मत तथा सेवा दृष्टि लिये हों और इसके लिए विकेन्द्रित व्यवस्थापरक विभिन्न समितियों का गठन कर योग्यतर के हाथों जिम्मा सौंपा जाय।

समारोह में कोरोनाकाल में दिवंगत हुए लोगों को श्रद्धांजलि देने के पश्चात सचिव ने प्रतिवेदन एवं कोषाध्यक्ष ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। इस दौरान खेलकूद की गतिविधियां आयोजित की गई।

समारोह में भामाशाह सम्मान, वरिष्ठ जन सम्मान, विशिष्ट प्रतिभा सम्मान एवं संरक्षक सम्मान के साथ प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ एडवोकेट ऋषभ जैन ने की। मुख्य अतिथि भगवतीलाल भाणावत तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. कनकमल उदावत एवं मदनलाल कोठारी थे।

अंत में अध्यक्ष हिमांशुराय एवं महामंत्री दिलीप ने समारोह सहयोगियों में सक्रियता से भागीदारी निभाने वाले सर्वश्री निर्मल धींग, विनोद जारोली, ऋषभ भाणावत, लोकेश मल्हारा, युसूफ खान, महावीर भाणावत, लोकेश बाबेल, श्रीमती गरिमा बाबेल, श्रीमती सरोज सोनी, प्रदीप दक, श्रीमती सुनीता दक, गिरिराज सोनी, कोमल वया, गौतम मेहता, मनोज दक आदि का आत्मीय आभार व्यक्त किया।

- डॉ. तुक्तक भानावत

जार द्वारा पंकज शर्मा का अभिनंदन

उदयपुर (ह.सं.)। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान जार की उदयपुर इकाई द्वारा उदयपुर जार के सलाहकार सदस्य पंकज शर्मा का राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान पत्रकार और साहित्यकार कल्याण कोष के संचालन हेतु प्रबंध समिति में दो वर्ष के लिए सदस्य मनोनीत किए जाने पर मंगलवार को पगड़ी, शॉल, उपरना ओढ़ाकर स्वागत अभिनंदन किया गया।

अध्यक्ष अजय आचार्य ने बताया कि स्वागत समारोह में संरक्षक डॉ. तुक्तक भानावत, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भूपेंद्रकुमार चौबीसा, राजेंद्र हिलोरिया, अल्पेश लोढ़ा, आनंद शर्मा, अनिल जैन, रामसिंह चदाना, आमिर शैख सहित कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर पंकज शर्मा ने कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता पत्रकारों के लंबित भूखंड आवंटन की समस्या का जल्द से जल्द निस्तारण करवाना रहेगा। उन्होंने कहा कि कई पत्रकारों की पात्रता होने के बावजूद उनके अधिस्वीकरण में आ रही समस्याओं का निस्तारण करवाने का भी पूरजोर प्रयास करेंगे। साथ ही ज्यादा से ज्यादा वरिष्ठ पत्रकारों को पेंशन का लाभ मिले इसका भी वह पूरजोर प्रयास करेंगे।

अपना देश अपनी संस्कृति

राजस्थानी लोकजीवन में प्रियतमा संबंधी विविध सम्बोधन

अंगीली, अंधारियै वाग री चमेली, अतर री सीसी, अति हितकरण, अपछरा, अपछरा री अनुंहार, अरधंगी, अलप अहारी, अलबेली, आंगण सोही, आग्याकारी, आतम री आधार, आनंद की कंद, आनंद री वेळ, आभा बीजळी, आभा रा बीज। इंद्र री अपछरा। उजाळी रात री नदी, उदार, उमेदकारक, ऊजलदंती, ऊजली रात।

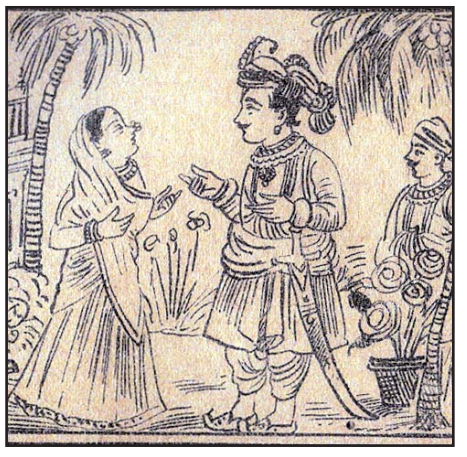

कंद री डळी, ककीली, कदम री छींया, काची कचनार, कामणगारी, कामणी, कामेदव री धजा, कामदेव री बरछी, किरत्यां रौ झूमकौ, कूंझबची, केल रस क्यारी, केळू री कांब, केळू री पांख, केसर क्यारी, केहर लंकी, कोकिला वांन, कोयल बैणी। खंजन नैणी, खागां री कस, खीर सागर री ल्हैर। गजगामण, गजबण, गवर, गवरल, गिणगौर, ग्रीषम री कदम केरी छाया, गुण आगर, गुण कौ प्रवाह, गुणनिधांन, गुणसागर,, गुणां री खांन, गुणां री गागर, गुल अनार, गुल क्यारी, गुल लंजा, गुल हंजा, गैंद गुलाल, गौरंगिया, गौरड़ी, गौरल, गौरांदे, गौरी। घरनार।

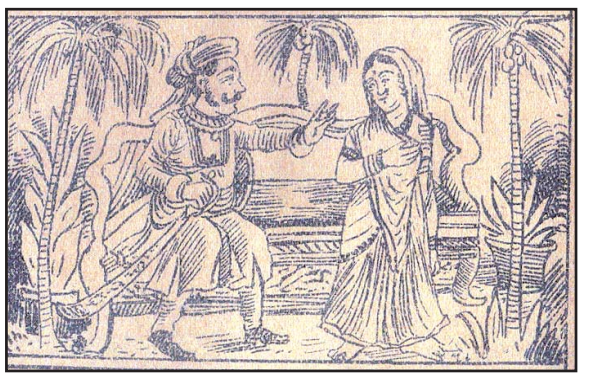

चंद किरण, चंदमुखी, चंदरमा री चांनणी, चंदावदनी, चंपै री कळी, चकीली, चटकीली, चतुर सिरोमण, चरणां री चाकर, चाळागारी, चित की हिरन, चितचोर, चितहरणी, चित्रांम री पूतळी, चीतालंकी, चतुराई री खांन, चूड़ाळी, चैत री चांनणी, चौमासे री बादळी, चासठ कला विचक्षणी। छंदगारी, छबीली, छोटालाड़ी। जग मीठी, जग व्हाली, जमना री तरंग, जीव री जड़ी, जोड़ायत, जोबन री गुडी, जोबनवती, जोरावर लाड़ी, झीण लंकी। डाबर नैणी। ढेल, ढोलिया री खिजमतगार।

तनक मिजाजण, तिरिया, तीखा नैंणी, तीसरी बूबन। दारा, दारू री बतक, दुखभंजन, दुखहरण, दूसरी फूलवंती, देह री छाया। धण। नखराळी, नया कुंजां मैं गळी, नवल नगरी, नवल बनी, नसीली, नाजक बनी, नाजुकड़ी, नाजुकड़ी नार, नाजौ, नानकड़ी नार, नार, नितंबण, नेह री नदी, नैनकड़ी नाजू।

पंजाब री हीर, पति प्यारी, पति-वसकरण, पदमण, पदमणी, परणी, परतख माया, प्यारी, पातळड़ी, पातळ पेटी, प्रांणप्यारी, प्रांणवल्लभा, प्रांण-वसकरण, पिक वैणी, पिव प्यारी, प्रीतम प्रांणप्यारी, प्रीतम रा गळा री माळा, पूगळ री पदमणी, पून्यूं रौ चांद, पेखन उछाह, प्रेम पावन, प्रेम उजागर, प्रेम का नूर, प्रेम मूरत, पैली मारवी। फबीली, फूलती चंबेली, फूल बनी, फूलवंती।

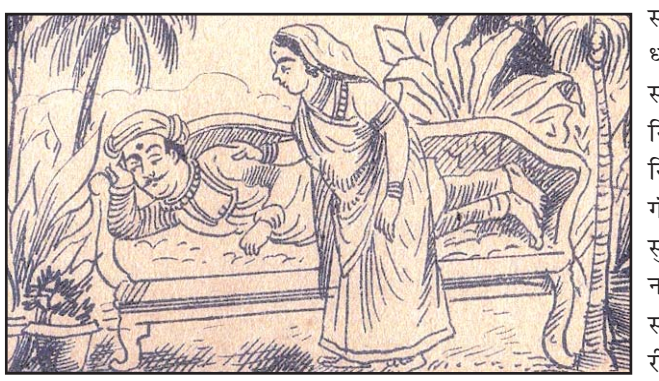

बंकीली, बचकानी, बत्तीस लखणी, बनड़ी, बनी बहुरांणी, बहू, बागां री कोयलड़ी, बादळ वरणी, बाला, बीनणी, बौह परवारी। भंवर की फूलवाड़ी, भंवरी, भादरवै री बादळी, भाम, भामण, भायां प्यारी, भायां री बैनड़, भायां व्हाली, भारज्या। मंदगत, मनभावन, मनमेळू, मनमैमंती, मनमोहणी, मनरंजन, मन री प्यारी, मरवण, महल, महलां मूंघी, मानणी, मनसरोवर कौ हंस, मानेतण, मारवण, मारवणी, मारूणी, मारू, मारूदेस री मारवी, माळा री डुगडऊगी, मिजाजण, मिजाजण गौरी, मिरग री रागमाळा, मिरगानैंणी, मिरगालोचनी, मीठी बोली, मीणा मरवण, मूंध, मूमल, मेवासण, मोटा घर री नार, मोत्यां मूंघी, मोत्यां री लड़ी, मावनी, मोहन महिर, मोहनी मूरतवांन।

रंकीली, रंगभरी नागवेली, रंगभीनी, रंगरेळी, रंगीली, रंझीली, रंभा, रभा लाड़ी, रतिरूप नागर, रमकीली, रमणी, रसवंती रसविलसणी, रसीली, राजगहेली, राजवण, रायजादी, रायरसवंती, रूप की निधांन, रूप री रंभा, रूप री रायजादी। लगन री लड़ी, लजीली, लाड़लड़ी, लाड़ली, लाड़ी, लाड़ीसा, लिछमी, लिछमी कौ अवतार, लीलावती। वनता, वरसायत री वागवाड़ी, वलभा, वसंत री केतकी, वंसत री फुलवाड़ी, वाग री सिरूंज, वादळ री बीजळी, वाम, वाल्ही।

श्री कौ अवतार, सजीली, सदासुहागण, सदा सेवक, सनेह की लहर, समकीली, सरद की चांनणी, सरद कौ कमल, सरब की जांण, सरस रस, सरस सलूंणी, सहेल्यां राया सिणगार, सांवण गढ़ री तीजणी, सांवण री झड़ी, सांवण री तीज, सांवण री नदी, सांवण री वीजळी, सांवण रौ धनक, सायजादी, सायधण, सारंग नैणी, सारंग वैणी, सिंघलदीप री पदमणी, सिंघलदीप री सोरठ, सुंदर, सुंदर गौरी, सुख री लहर,, सुखसागर, सुगणां री खांन, सुगणी, सुगणी नार, सुगणी सुवागण, सूरत री सोहणी, सूरवीर री समसेर, सेज री सायजादी, सेज रौ सिणगार, सोना साही, सोभा कौ सदन। हंजा, हंसाहाळी, हरियाली, हाजरबंदी, हिरणांखी, हुकमणी, हुकम री चाकर, हुकमी।

कठपुतली शिक्षण का माहात्म्य

भारतीय कठपुतलियां सदा ही देश के सार्वजनिक एवं सांस्कृतिक जीवन में प्रमुख भाग लेती रही हैं। महाभारत तथा रामायण में जहां भी कठपुतलियों का उल्लेख हुआ है। वहां उन्होंने सन्देश वाहक एवं मनोरजन प्रदान करने का कार्य किया है।

विक्रमादित्य के राज्यकाल में 'सिंहासन बत्तीसी' नामक कठपुतली खेल उनके दरबार का एक अद्‌भुत आकर्षण था। उसके बाद अनेक भारतीय राजाओं ने कठपुतली कलाकारों को आश्रय प्रदान कर कठपुतली कला को बढ़ावा दिया। देश में आज जितनी भी कठपुतली शैलियां विद्यमान हैं उनमें किसी समय वृहद कठपुतली नाट्यों की रचना हुई थी।

आन्ध्र की छाया पुतलियां, दक्षिण की बम्मोलोटम एवं उड़ीसा की काष्ठपुतलियों में आज भी रामायण, महाभारत तथा भागवत की कथानों पर आधारित नाट्य विद्यमान हैं जो जनता का स्वस्थ मनोरजन करते हैं। राजस्थानी कठपुतली शैली में तो सैकड़ों ऐसे कठपुतली दल हैं जो देश के कोने-कोने में फैलकर जनता का मनोरंजन करते रहे हैं। इन पुतलियों के मनोरंजनात्मक एवं शैक्षणिक पक्ष की ओर हमारे पूर्वज पूर्ण रूप से जागरूक थे। पुतलीनाट्यों एवं उनके पूर्व रूप चित्रपटों के जरिये हमारे पूर्वजों ने समाज को सदा ही उच्चादर्शों की ओर प्रेरित किया है।

महाभारत तथा रामायण की समस्त कथाएं आन्ध्र की चर्म पुतलियों में पुतलीनाट्य के रूप में अवतरित होती हैं और असंख्य जनता के सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर को ऊपर उठाये हुये हैं। आन्ध्र का कोई उत्सव और पर्व ऐसा नहीं है जहां ये पुतलियां प्रदर्शित नहीं होतीं और बालक, युवा तथा वृद्धजन को प्रेरित नहीं करतीं।

पुतलियां दर्शकों को मानवी पात्रों से भी अधिक प्रभावित करती हैं। यह बात हमारे पूर्वजों को पहले से मालूम थी। यही कारण है कि कठपुतलियों का उद्‌भव नाटकों से पूर्व हुआ और कठपुतली को मानवीय नाट्य की जननी माना गया। कठपुतली का अतिरंजनात्मक एवं प्रतीकात्मक पक्ष, जो आधुनिक कठपुतलीकार हाल ही जान पाये हैं, हमारे पूर्वजों को पहले से प्रभावित करता रहा है और उन्होंने पुतली को कभी मानवी पात्र की प्रतिकृति नहीं माना। उसका स्वतंत्र अस्तित्व ही उन्होंने स्वीकार किया है। यही कारण है कि समस्त पारम्परिक पुतलीनाट्यों में पुतलियों के निर्माण, पुतली नाट्यरचना तथा पुतली संचालन में अतिरंजना और प्रतीकात्मकता को ही प्रमुख स्थान दिया गया है। पुतली के इन गुणों के बिना वे कभी भी कारगर नहीं बनतीं, यह बात उन्हें मालूम थी।

यूरोप के आधुनिक कठपुतलीकारों ने जब प्रौढ़ों के मनोरंजन के लिये पुतलीनाट्य बनाये तो उन्हें स्वयं यह अनुभव हो गया कि पुतलियाँ बच्चों के लिये और भी अधिक कारगर सिद्ध हो सकती हैं। खिलौनों का प्रतिरूप होने के नाते वे बच्चों के लिये खिलौने से भी अधिक रुचिकर हो सकती हैं। खिलौना तो खेलने मात्र तक ही सीमित है परन्तु पुतली खिलौने से ऊपर उठकर चलती फिरती हुई जब सजीव प्राणी की तरह हरकत करने लगती है तो बच्चे का कुतुहल जागृत हो उठता है और वह स्वयं उसे संचालित करके मनोरंजित होने लगता है। उसे वह नाना रूप-रंग देकर तथा अनेक कथा-प्रसंगों को उस पर ढालकर नवीन संसार की सृष्टि करता है।

आज के कल्पनाशील और जागरूक अध्यापक को जब यह मालूम हुआ कि पूर्ण कठपुतली को बनाने, तराशने, रंगने, कपड़े पहिनाने, उसके लिये नाट्य लिखने, संगीत नृत्य रचने आदि की नाना क्रियाए सन्निहित हैं तो उसका शैक्षणिक उपयोग उसके लिये अत्यन्त सरल बन गया। कठपुतलियों के माध्यम से बच्चा बोलता, गाता, नाचता तथा संवाद कहता है इसलिये भी उसकी उपयोगिता में किसी को शंका नहीं हुई। कठपुतलियों के इस बहुरूपी पक्ष को लेकर विदेशों में अनेक शैक्षणिक उपयोग होने लगे। उनसे बच्चों की भाषा सुधारने, भाषाज्ञान कराने, उनके अंग प्रत्यंगों को समन्वित करने, आदतें बनाने तथा अपने आपको अभिव्यक्त करने के तरीके निकाले गये। आज तो यूरोप के अनेक स्कूलों में कठपुतलियों ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है। अनेक प्रशिक्षण केन्द्र खुल गये हैं तथा बच्चों की शिक्षा के अनेक पक्षों को कठपुतली के माध्यम से पूरा करने के तरीके ढूंढ़ निकाले गये हैं।

इसी लक्ष्य को लेकर भारतीय लोककला मण्डल में भी शैक्षणिक कठपुतलियों के महत्त्वपूर्ण प्रयोग शुरु हुए। शिक्षा विभाग ने भी कठपुतलियों के शैक्षणिक महत्त्व को स्वीकार किया और कला मण्डल को इस दशा में विविध प्रयोग करने के लिये अनेक सुविधाएं प्रदान कीं। **-म. भा.**

बाजार / समाचार

विज्ञापनों की निगरानी पर बनी हाई पावर कमेटी में आत्मदीप

भोपाल (वि.)। सुप्रीम कोर्ट के आदेश की पालना में मध्यप्रदेष सरकार ने सरकारी विज्ञापनों के विनियमन (रेगुलेशन) के लिये राज्य स्तर पर उच्चाधिकार

प्राप्त समिति गठित की है। इसमें वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व सूचना आयुक्त आत्मदीप को सदस्य नियुक्त किया गया है। इस बारे में राज्यपाल की ओर से आदेश जारी किया गया है।

साथ ही, भारत सरकार के संयुक्त सचिव, नीति एवं प्रशासन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली को इस वैधानिक समिति के गठन की सूचना दी गई है। प्रदेश की पूर्व अपर मुख्य सचिव अरूणा शर्मा समिति की अध्यक्ष और पूर्व निदेशक जनसंपर्क लाजपत आहूजा सदस्य होंगे। पहली बार गठित इस 3 सदस्यीय समिति के अधिकार और कार्य सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार ही होंगे। राज्य सरकार के आदेश में प्रदेश के जनसंपर्क आयुक्त को समिति के लिये सभी आवश्यक व्यवस्थायें करने का जिम्मा सौंपा गया है। इसके लिये जनसंपर्क निदेशक को समिति का सदस्य सचिव बनाया गया है।

आत्मदीप ने बताया कि यह समिति सरकार की ओर से किये जाने वाले विज्ञापनों की विषय वस्तु का सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के अनुसार परीक्षण कर जरूरी कार्रवाई करेगी। साथ ही, इस बारे में जनता से मिलने वाली शिकायतों का निपटारा भी करेगीं सरकारी विज्ञापनों में जन-धन का दुरूपयोग न हो, इसकी निगरानी करना समिति का मुख्य दायित्व रहेगा।

शर्मा और आफरीदी को डॉ. रत्नाकर पांडेय सम्मान

जयपुर (वि.)। साहित्यांचल संस्था भीलवाड़ा द्वारा आयोजित शिखर सम्मान समारोह में श्रीकृष्ण शर्मा एवं फारूक आफरीदी को 'डॉ. रत्नाकर पांडेय स्मृति सम्मान' प्रदान किया गया। संगम विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रामपाल सोनी, संगम इंडिया के प्रबंध निदेशक डॉ. एस. एन. मोदानी, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. करूणेश सक्सेना तथा साहित्यांचल समारोह के संयोजक सत्यनारायण व्यास 'मधुप' ने दोनों साहित्यकारों को प्रशस्ति पत्र और श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया।

इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक और एचडीएफसी बैंक में साझेदारी

उदयपुर (वि.)। इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक (आईपीपीबी) एवं एचडीएफसी बैंक ने अर्धशहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आईपीपीबी के ग्राहकों को विभिन्न बैंकिग उत्पादों एवं सेवाओं की पेशकश के लिये एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किये है। इस समझौते के तहत बगैर बैंक एवं कम सेवा वाले क्षेत्रों को लक्षित किया गया है। आईपीपीबी के 4.7 करोड़ से ज्यादा ग्राहक जिनमें लगभग 90 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहते है, इस साझेदारी से लाभान्वित होने की उम्मीद है। यह रणनीतिक गठबंधन आईपीपीबी को अपनी अभिनव डोर स्टेप बैंकिग सेवा के माध्यम से पहुंच कायम कर उन्हें वित्त तक पहुंच सहित वहनीय एवं विविधिकृत पेशकश प्रदान करेगा।

विश्वराज शुगर इंडस्ट्रीज फार्मास्युटिकल ग्रेड चीनी का उत्पादन करेगी

उदयपुर (वि.)। बीएसई और एनएसई के स्मॉल कैप इंडेक्स में सूचीबद्ध, विश्वराज शुगर इंडस्ट्रीज लि.ने स्टॉक एक्सचेंजों को सूचित किया कि वह अपनी पेटेंट तकनीक का उपयोग करके फार्मास्युटिकल ग्रेड चीनी का उत्पादन करेगी। कंपनी के पास नवीनतम टेक्नोलॉजी के साथ एक अत्याधुनिक आर एंड डी केंद्र है। कंपनी भारत में अग्रणी फार्मास्युटिकल कंपनियों को इस फार्मा ग्रेड चीनी की आपूर्ति करने की प्रक्रिया में है और इसे पूरी दुनिया में निर्यात करने की भी योजना है। इसने आईएस 1151, 2021 संस्करण में निर्धारित विनिर्देशों को पूरा करते हुए परिष्कृत ग्रेड चीनी का उत्पादन भी शुरू कर दिया है।

डेसिफर लैब्स लि. प्रगति के पथ पर

उदयपुर (वि.)। सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में सेवाएं और प्रमुख समाधान प्रदान करने में लगे बीएसई सूचि बद्ध डेसिफर लैब्स लि. (बीएसई कोड:524752) के निदेशक मंडल ने बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज को सूचित किया कि यह विस्तार लक्ष्यों की दिशा में आक्रामक रूप से काम कर रहा है और फार्मा एवं सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में व्यवसायों के अधिग्रहण के विकल्पों सहित कंपनी के कारोबार के विस्तार के लिए विभिन्न प्रस्तावों पर विचार किया जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अपनी उपस्थिति का और विस्तार करने के उद्देश्य से, कंपनी, अपनी सहायक कंपनी के माध्यम से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी स्पेस में प्रवेश करना चाह रही है।

महाराष्ट्र के गवर्नर द्वारा निधि पूनमिया का सम्मान

उदयपुर (वि.)। मिसेज इंडिया 2021-22 एवं समाजसेविका उदयपुर

की निधि आनंद पूनमिया ने महाराष्ट्र के गवर्नर भगतसिंह कोशियारी से मुम्बई स्थित राजभवन में भेंट की। इस दौरान दोनों के बीच सामाजिक विषयों पर चर्चा हुई। गवर्नर ने निधि की प्रशंसा करते हुए सम्मानित किया।

डॉ. शर्मा गजेटियर संपादक मंडल में

उदयपुर (वि.)। राज्य सरकार ने एक आदेश जारी कर इक्कीस सदस्यीय

गजेटियर संपादक मंडल का गठन किया है जिसमें प्रकृति विशेषज्ञ एवं पूर्व वन अधिकारी डॉ सतीश कुमार शर्मा को मनोनीत किया है। यह संपादक मंडल राजस्थान के 6 जिलों जोधपुर, बांसवाड़ा, अलवर, करौली, हनुमानगढ़ एवं प्रतापगढ़ के जिला गजेटियरों की जांच, संवीक्षा, संपादन एवं परिष्कृत की प्रकाशनार्थ अंतिम रूप प्रदान करेगा।

रेडक्लिफलैब्स ने सैटेलाइट लैब शुरू की

उदयपुर (वि.)। अमेरिका और भारत में रेडक्लिफ लाइफटेक की इकाई रेडक्लिफ लैब्स ने उदयपुर में सहेली मार्ग पर अपनी सैटेलाइट लैब शुरू की है। लैब को रेडक्लिफ लैब्स की सह-संस्थापक हर्षिता जैन द्वारा लॉन्च किया गया।

रेडक्लिफ लैब्स को रेडक्लिफ लाइफ डायग्नोस्टिक्स के नाम से भी जाना जाता है। यह नई लैब हर दिन 1,000 हेल्थ पैकेज के साथ 500 से ज्यादा घरेलू टेस्ट प्रोसेस करने में सक्षम है और अन्य टेस्ट नोएडा में कंपनी की नैशनल रेफरेंस लैब से प्रोसेस किए जाते हैं। लैब सैम्पल मिलने के बाद 8 से 12 घंटे के अंदर सभी जांच रिपोर्ट मुहैया कराती है। कन्वीनिएंस, किफायत, सटीक परिणाम और निर्भरता की वजह से होम कलेक्शन में तेजी आने से रेडक्लिफ लैब्स द्वारा यह कदम तेज मांग को ध्यान में रखते हुए सेम-डे टेस्ट रिजल्ट के साथ ऑनलाइन प्रीवेंटिव ऑन-डिमांड डोरस्टेप हेल्थ स्क्रीनिंग सेवा प्रदान कराने की दिशा में महत्वपूर्ण है।

भंवरलाल श्रीवास सम्मानित

भोपाल (वि.)। 'कला समय' के बहुविज्ञ संपादक भंवरलाल श्रीवास को जयपुर के इंटरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट द्वारा 26 दिसंबर को आयोजित ध्रुवपद-नाद-निनाद विरासत समारोह में लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान से नवाजा गया। यह सम्मान श्रीवासजी को संपादन, लेखन तथा सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के फलस्वरूप सचिव डॉ. मधु भट्ट तैलंग द्वारा प्रदान किया गया।

पुरोहित सदस्य मनोनीत

उदयपुर (वि.)। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के संयुक्त शासन सचिव

पुरुषोत्तम शर्मा के अनुसार उदयपुर से राजस्थान पत्रिका के संदीप पुरोहित को सदस्य मनोनीत किया गया है। समाचार पत्रों, समाचार समितियों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधियों तथा स्वतंत्र पत्रकारों के अधिस्वीकरण के विषय में राज्य सरकार को परामर्श देने के लिए समिति का पुनर्गठन दो वर्ष की अवधि के लिए किया गया है।

शर्मा सदस्य मनोनीत

उदयपुर (वि.)। राजस्थान पत्रकार और साहित्यकार कल्याण कोष प्रबंध समिति में पंकज शर्मा को सदस्य मनोनीत किया गया है। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के संयुक्त शासन सचिव पुरुषोत्तम शर्मा के अनुसार यह मनोनयन दो वर्ष के लिए है। शब्द रंजन की बधाई।

नंद चतुर्वेदी की स्मृति में काव्यगोष्ठी, पुस्तक विमोचन

उदयपुर (ह.सं.)। वरिष्ठ साहित्यकार नंद चतुर्वेदी की स्मृति में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार में नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन

एवं प्रसंग संस्थान की साझेदारी में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें संभाग के 30 कवियों ने सरस काव्य पाठ किया। चतुर्वेदी की सद्य प्रकाशित राजनीतिक कविताओं की पुस्तक 'हम नई कविताएं लिखते हैं' का विमोचन साहित्यकार सदाशिव श्रोत्रिय ने किया। पुस्तक का संपादन हिमांशु पंड्या ने किया। अध्यक्ष प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि नंद बाबू की राजनीतिक वैचारिकता की अभिव्यक्ति का कविताओं में आना साहित्य को व्यापक फलक देता है। डॉ. मंजु चतुर्वेदी ने कविताओं को नंदबाबू के उस विचार की छाया कहा जिसमें स्वतंत्रता और समानता की बात की जाती है।

प्रसंग संस्थान के अध्यक्ष इन्द्रप्रकाश श्रीमाली, किशन दाधीच, डॉ. महेंद्र भानावत, प्रो. माधव हाड़ा, जयप्रकाश, ज्योतिपुंज, नरोत्तम व्यास, आदर्श चतुर्वेदी, रजनी कुलश्रेष्ठ आदि ने विचार रखे। वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय की क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रश्मि बोहरा ने स्वागत किया।

सिम्स की अनूठी उपलब्धि

उदयपुर (वि.)। सिम्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल (मेरेंगो एशिया नेटवर्क हॉस्पिटल) वर्ष के आखिरी 15 दिनों में चार हृदय प्रत्यारोपण के साथ 2021 के आखिरी दिन महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करने वाला गुजरात का पहला अस्पताल बनकर देश में इस मुकाम तक पहुंचने वाले अस्पतालों की सूची में शामिल हो गया है।

सिम्स सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में हृदय प्रत्यारोपण विभाग के प्रमुख डॉ. धीरेन शाह ने कहा कि सिम्स ने पांच साल में 25 हृदय प्रत्यारोपण सर्जरी पूर्ण की हैं। इनमें से 14 सर्जरी पिछले एक साल में, अंतिम आठ सर्जरी दो महीने में और 4 हृदय प्रत्यारोपण दिसम्बर महीने के आखरी तीन हफ्तों मे किए हैं। कार्डिओलॉजिस्ट डॉ मिलन चग ने कहा कि 25वीं हृदय प्रत्यारोपण सर्जरी 59 वर्षीय अहमदाबाद निवासी की हुई। उनकी हालत ठीक है। हृदय दाता 32 वर्षीय वडोदरा निवासी था, जो सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल होने के बाद ब्रेन डेड घोषित किया गया।

हार्ट ट्रांसप्लांट सर्जन डॉ. धवल नाइक ने कहा कि उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवा, देखभाल प्रदान करने में नए मानक स्थापित करने के लिए हम निरंतर प्रयास करना जारी रखेंगे। कार्डियक एनेस्थेसियोलॉजिस्ट और इंटेंसिविस्ट डॉ चिंतन शेठ ने कहा कि यह उपलब्धि डॉक्टरों और अन्य पेशेवरों की टीम के बेहतर कौशल और ज्ञान को दोहराता है।

सांई तिरूपति विश्वविद्यालय का प्रथम भव्य दीक्षांत समारोह

- 142 एमबीबीएस व बीएससी नर्सिंग दीक्षार्थियों को मिली डिग्री

उदयपुर (ह.सं.)। सांई तिरुपति विश्वविद्यालय का भव्य प्रथम दीक्षांत समारोह शुक्रवार को विश्वविद्यालय परिसर उमरड़ा में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं नियंत्रक डॉ. लाखन पोसवाल थे। विशिष्ट अतिथि गोविंद गुरु ट्राइबल विश्वविद्यालय बांसवाड़ा के कुलपति प्रो. इंद्रवर्धन त्रिवेदी थे। फाउंडर ट्रस्टी भोलाराम अग्रवाल, सांई तिरुपति विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल, श्रीमती शीतल अग्रवाल, एसटीयू के कुलपति प्रो. इंद्रजीतसिंह सिंघवी, रजिस्ट्रार देवेन्द्र अग्रवाल, डीन डॉ. मधु सिंघल सहित अकादमिक काउंसिल व बॉम के सदस्य, डीन, फेकल्टीज, अधिकारी, छात्र, अभिभावक सहित गणमान्यजन मौजूद थे।

राष्ट्रगान के बाद प्रेसिडेंट (वीसी) डॉ. इंद्रजीत सिंघवी ने सांकेतिक रूप से ड्रम बजाते हुए प्रथम दीक्षांत समारोह के शुभारंभ की घोषणा की। प्रो. एनॉटोमी डॉ. मोनाली सोनावाने ने सभी डिग्रीधारियों को शपथ दिलाई। समारोह में प्रथम बैच (2015-16) के 142 एमबीबीएस, बीएससी नर्सिंग प्रथम बैच (2017-18) को डिग्रियां प्रदान की गई। एमबीबीएस में स्वर्ण पदक अनिषा शर्मा जबकि बीएससी नर्सिंग में स्वर्ण पदक उमर शरीफ खांडे को प्रदान किया गया। एमबीबीएस में आयुष चपलोत को रजत पदक, बीएससी नर्सिंग में सायमा चौधरी को रजत पदक प्रदान किए गए।

विशिष्ट अतिथि प्रो. आईवी त्रिवेदी ने कहा कि जब तक कि आप वास्तविक दुनिया की चुनौतियों को स्वीकार नहीं करते हैं तब तक डिग्री सिर्फ एक कागज का टुकड़ा है। डाक्टर यौद्धा हैं, उनके सामने कई चुनौतियां हैं। सांई तिरुपति विवि के डिग्रीधारियों को खिले चहरे देख कर लगता है कि हमारा आने वाला भविष्य उज्जवल है।

मुख्य अतिथि डॉ. लाखन पोसवाल ने आशीष अग्रवाल को दीक्षांत समारोह के लिए साधुवाद दिया व कहा कि आरएनटी में मैंने कभी दीक्षांत नहीं करवाया है। आपसे प्रेरणा लेकर अगली बार दीक्षांत समारोह करवाऊंगा। डॉ. पोसवाल ने दीक्षार्थी डाक्टरों को जीवन में सदा सकारात्मक एटीट्यूड रखने, हर परिस्थिति में सहज रहने और मरीजों की सेवा को तत्पर रहने की सीख दी। उन्होंने कहा कि एमबीबीएस के बाद केवल पीजी व अन्य लक्ष्यों के बारे में ही ना सोचकर यह भी ध्यान में रखें कि गांव व गरीबी से जूझ रहे क्षेत्रों में आपकी सेवाओं की सख्त जरूरत है। आरएनटी मेडिकल कॉलेजों में भी जूनियर रेजिडेंट की सीटें खाली हैं, वहां पर कार्य कर मरीजों की सेवा कर सकते हैं।

डॉ. पोसवाल ने कहा कि वर्तमान में डाक्टरी पढ़ाई में ट्रेंड खराब चल रहा है। नामी डाक्टर्स की फेकल्टी पढ़ाने वाली है मगर स्टूडेंट्स कक्षाओं में कम आते हैं। हमें इस ढर्रे को बदलना होगा। एनएमसी भी अब सीवीएमई याने कॉम्पीटीशन बेस्ड मेडिकल एजुकेशन हो गया है। जब तक आपको पेशेंट के एज्जामिशने का तरीका पता नहीं है, डिफेंशियल डायग्नोसिस बनाने का तरीका पता नहीं है, क्या रिलवेंट इन्वेस्टीगेशन्स हैं, पेशेंट से बात कैसे करनी है, तब तक आप कितना भी पढ़ लीजिए वो किसी काम का नहीं। मेडिकल की पढ़ाई कभी खत्म नहीं होती। वर्तमान की स्क्रब टाइफस, डेंगू, मलेरिया, कोविड के केसेज की चुनौती बिना प्रेक्टिकल ज्ञान के स्वीकार नहीं की जा सकती। सफलता कभी अंतिम नहीं होती, यह एक यात्रा है, अंतिम पड़ाव नहीं।

चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने दीक्षार्थियों को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि मुझे बताते हुए हर्ष हो रहा है कि पीआईएमएस के आधे से ज्यादा स्टूडेंट्स नीट पीजी क्वालीफाई कर गए हैं जो हम सबके लिए गर्व की बात है। चेयरपर्सन शीतल अग्रवाल ने सांई तिरूपति विश्वविद्यालय के अतिथियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के पांचवें वर्ष मे प्रवेश कर चुका है। इन पांच वर्षों में हमने कई उतार-चढ़ाव देखे एवं विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। उम्मीद है कि दीक्षार्थी विश्वविद्यालय के यश में अभिवृद्धि करेंगे।

डॉ. इंद्रजीत सिंघवी ने कहा कि सांई तिरुपति विश्वविद्यालय अप्रैल 2016 में स्थापित किया गया था और स्थापना के बाद से चिकित्सा विज्ञान, नर्सिंग, फार्मेसी, फिजियोथेरेपी और फैशन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर ख्याति प्राप्त की है। विश्वविद्यालय को यूजीसी धारा 2 (एफ) की मंजूरी मिल गई है। शीघ्र ही विश्वविद्यालय नैक मान्यता और एनआईआरएफ रैंकिंग जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली डिग्री को यूजीसी अधिनियम की धारा 2 (एफ) के तहत अनुमोदित किया गया है। पीआईएमएस का नाम मेडिकल स्कूल की विश्व निर्देशिका की सूची में शामिल किया गया है और ईसीएफएमजी की ओर से स्पोंसरशिप नोट को शामिल किया गया है ताकि हमारे मेडिकल स्नातक अमेरिका और कनाड़ा में अभ्यास करने के लिए पात्रता परीक्षा में बैठने के योग्य हों। नर्सिंग स्नातकों को हमारे अपने अस्पताल के साथ-साथ इंदिरा आईवीएफ और जेके पारस अस्पताल में स्थानीय स्तर पर 100 प्रतिशत प्लेसमेंट मिला है।

राजस्थान विद्यापीठ एवं रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन के बीच एमओयू

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ एवं रिसर्च फॉर रिसर्जेंस फाउंडेशन, नागपुर के मध्य एमओयू साइन किया

गया। एमओयू से विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों में अध्ययनरत छात्रों एवं संकाय सदस्यों को रिसर्च में नवचार एवं रचनात्मकता के साथ कार्य हेतु सहायोग प्राप्त होगा। कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि दोनों संस्थान संगोष्ठियों, कार्यशालाओं का आयोजन करेंगे तथा अपने संस्थानों में उपलब्ध संसाधनों को सांझा करेंगे। एमओयू के अन्तर्गत दोनों संस्थाओं द्वारा ग्रामीण भारत के विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन प्रस्तावित किया गया है। राष्ट्र निर्माण इन गतिविधियों का मुख्य उद्धेश्य होगा जिसमें गरीब, आदिवासी युवक-युवतियों एवं महिलाओं के शैक्षणिक उत्थान पर बल दिया जाएगा।

पशुओं में सर्वाधिक .....

(पृष्ठ तीन का शेष)

घोड़े चढ़ाने का तात्पर्य देवता के लिए उसका उत्सर्ग करना भी है और सम्बन्धित देवता की सवारी का प्रतीकार्थ भी है। मिट्टी के घोड़े से तात्पर्य धरती से जुड़ा इंसान धरती को ही सब कुछ मानते अंत में अपना सर्वस्व धरती को ही समर्पित करने में जीवन की सार्थकता मानता है।

घोड़े तो सर्वाधिक रूप में इसलिए भी चढ़ाये जाते हैं कि मानव जीवन और देव-दानव भी घोड़े को ही सफलतम साथी मानते हैं। यही प्राणी सबसे वफादार, स्वामीभक्त, विश्वसनीय तथा भरोसे वाला होता है पर अन्य जानवर भी पालतू रूप में मानव के हितैषी तथा घनिष्ट संगी होने से भैंसा, ऊंट, बैल भी चढ़ाये जाते हैं। कहीं-कहीं हाथी, खरगोश, मुर्गा और मोर भी चढ़ाया जाता है। सम्पन्न समझे जाने वाले बड़े घराने वाले गेंडा, चीता, बाघ भी चढ़ाते हैं।

ऐसी स्थिति में अच्छे कुशाग्र कलाकार कुम्हार से अपनी मरजी वाली माटी की कलात्मक आकृति बनाकर गाजेबाजे के साथ पूरे गांव में शाही सवारी के साथ जुलूस निकाल यह रस्म पूरी करते हैं। कहीं-कहीं सामान्य रूप में पुरुष या स्त्री के पुतले ही सजाधजा कर चढ़ाने का रिवाज है। इनके पीछे मनौती वाले की मान्यता, प्रियता तथा पसंदगी के साथ परम्परा, देवता की प्रकृति तथा कथनी का भी सबब मिलता है।

घोड़े चढ़ाने की प्रथा देश के हर अंचल में मिलती है। जिस समय जिस समस्या का उठाव मिलता है उस समय उसी समस्या के निराकरण के लिए बोलमा किंवा मनौती का बोलबाला मिलता है। उदाहरणार्थ उत्तर भारत में चेचक जैसी बीमारी के लिए इससे सम्बन्धित देवी शीतला की मनौती बोली जाती है। बिहार-बंगाल में ग्रामदेवता को हाथी-घोड़ा चढ़ाया जाता है। मध्यप्रदेश के खुजराहो अंचल में भी हाथी चढ़ाने की प्रथा देखी गई। चैन्नई की ओर उधर मान्य देव आयनार करप्पन तथा मुत्तईमन को घोड़ा भेंट किया जाता है।

मिट्टी के घोड़े के अलावा काष्ठ निर्मित पुतले-पुतली चढ़ाने का रिवाज भी मिलता है। मथुरा जिले में गोमथीकम्मा को तो गुड्डे के साथ उसके झुलने के लिए पालना और शरीर के विविध अवयव हाथ, पेर, नाक, कान जैसे हिस्से चढ़ाते हैं। यही नहीं, खिलौनों के रूप में यदाकदा सांप, बिच्छू भी चढ़ाते हैं।

मिट्टी के घोड़े के अलावा राजस्थान में बाबा रामदेव को लोग कपड़े के बने घोड़े चढ़ाते हैं। रामदेवजी का रेवंत नामक घोड़ा था जो देवघोड़ा ही था। रामदवजी उसी पर सवार हो हवा की तरह स्फूर्ति लिये एक स्थान से दूसरे स्थान पहुंच जाते। उनके जरगा नामक व्यक्ति था जो घोड़े की देखभाल करता था। उदयपुर क्षेत्र में जरगा नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थल उसी के नाम का है जो रामदेवजी द्वारा यहां आगमन पर जरगा की मंशा से रखा गया। मैंने रामदेवरा में रामदेवजी को छोटे-छोटे घोड़ों से लेकर पांच-पांच फीट के घोड़े चढ़ाते देखा है।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (3)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

रामदला पड़ का अध्ययन :

8 नवम्बर 1965 को रामदला नामक पड़ का अध्ययन करने के लिए कोटा जिला स्थित कोलासपुरा गांव के हरपाल पिता चन्द्रा नामक भोपे को आमंत्रित किया गया। तदनुसार

रामदला की पड़

रामदला का प्रदर्शन देखा गया। मूल गाथा लिपिबद्ध की गई और इनकी कला-संस्कृति सम्बन्धी कई महत्त्वपूर्ण बातें हमारे विषय का आधार बनीं। रामदला को 'भगवान का चंदोवा' भी कहते हैं।

हरपाल के अलावा सालावास (मथुरा) का सोकरणा, डोलम (कोटा) का मांगू, जयपुर का गोरधन, नाणदा (बूंदी) का सुलतान, चौकड़्या (जयपुर) का सुलतान तथा ढाणी (टौंक) का केल्या भोपा भी पड़ बांचने के नामी कलाकार हैं। इनका बहीभाट किशनगढ़ के पास अराया नामक गांव में रहता है जिसका नाम लालू है।

आमजमाता रींछेड़ की :

प्रसिद्ध रणक्षेत्र हल्दीघाटी के पास ऊनवास में पीपलाज का जो मंदिर है वहीं सबसे पहले देवियों की बैठक हुई। देवी अम्बाव ने केल के पत्तों पर सिन्दूर के अक्षरों में अपनी पांचों बहिनों को संदेशा भेजा। मूर मालवा, गुजरात, चित्तौड़, हाड़ौती तथा मारू प्रदेश में जहां ये रहती थीं, हीरां दासी गई। तदनुसार पंचायती जमी। पंगत लगी। बीच में देवियां। किनारों पर एक ओर गजानंद तथा दूसरी ओर पोल्या। भण्डार पर आमज रहती जो खानपान की व्यवस्था करती। जितने जीमनेवाले होते उतने ही भोमल्ये बनाये जाते।

एक दिन आमज (चोर लक्षणों वाली देवी) ने एक भोमल्या छिपा लिया। देवियों में खलबली मच गई। पीपलाज को पता चला तो उसने आमज को मन्दिर में बंद करदी और मिर्चों की धूणी दी। मयूर को पहरे पर बिठाया और कहा कि देवी भाग न निकले।

देवी ने निकलने का बहुत यत्न किया और सफलता पाई। जब निकलने लगी तो मोर बोलने लगा। देवी ने कहा- मत बोल, मैं तुझे सोने का बना दूंगी। वह पूरा नहीं बोल पाया। केवल क् बोल कर ही रह गया। इसीलिए आज भी मोर क् ही बोलते हैं। देवी ने मोर को सोने का बना दिया। इससे वह घबराया। घबराता भागता वह देवी पीपलाज के पास गया और सारा किस्सा कह सुनाया। पीपलाज ने उस पर का सारा सोना ले लिया। पखों में केवल मासा भर सोना रहने दिया जो मोरपंखों पर अभी भी देखने को मिलता है।

मन्दिर छोड़ आमज वहां से रींछेड़ के मगरे में जा घुसी। वहीं रींछ्या भील रहता था। यह बड़ा गरीब था और बांस काट-बेचकर अपना गुजारा चलाता था। एक दिन जहां देवी छिपी बैठी थी। वहां आया और कुल्हाड़ी चलाने लगा। एक कुल्हाड़ी मारी तो पानी की धार निकली। दूसरी पर दूध की। तीसरी पर खून की तथा चौथी कुल्हाड़ी मारते ही देवी प्रकट हुई और भील से कहा जो चाहे सो मांग।

भील ने कुछ नहीं मांगा। तब उसने कहा- पास ही जो आम का पेड़ है उसके पत्तों का खाका बांध कर लेजा। इसे अपने कोटे में रख देना। उसने ऐसा ही किया। सभी पत्ते हीरे जवाहरात के रूप में परिणत हो गये। भील ने अपनी स्त्री को देवी की बात कह सुनाई। तब एक दिन उसकी स्त्री ने पुन: भील को देवी के पास भेजा। भील गया। देवी ने कहा, तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों गवाड़ा बनाओ और उसके बाद करियो डड़ियो, करियो डड़ियो, करियो डड़ियो कहते हुए दोनों उसमें चले जाना। पीछे मत देखना। उन्होंने यही किया।

ऐसा करने पर गायों-भैंसों की लम्बी कतार बन गई। गवाड़ा पूरा भर गया। कुछ चौपाये बाहर रह गये वे गायों भैंसों के प्रतीक सफेद-काले पत्थर बन गये जो आज भी वहां देखे जा सकते हैं।

आम का वह वृक्ष भी रींछेड़ में अभी है जिसका सन्दर्भ ऊपर दिया गया है। रींछेड़ में देवी जो पछेटे खेलती थी वे पछेटे भी वहां देखने को मिलते हैं। उन्हें कोई उठा नहीं सकते। देवी की एड़ियां भी वहां पत्थरों पर स्पष्ट अंकित हैं। देवी के मन्दिर के पास मगरी पर एक वेरी (नाली) भी है जो प्राय: सूखी रहती है।

केवल जेठी अष्टमी को मेले के दिन इसमें पानी आता है। उस पानी के अनुसार लोग आगे आनेवाले समय का अन्दाज लगाते हैं। बहुत से लोग उसी के अनुसार अपने टीपणे आदि तैयार करते हैं। यदि बिल्कुल ही पानी नहीं आता है तो अकाल होगा समझ लिया जाता है।

देवनारायणजी की पड़ :

देवनारायणजी की पड़ का सुप्रसिद्ध भोपा मावली निवासी अम्बालाल सालवी भारतीय लोककला मण्डल में आमंत्रित किया गया।

देवनारायण की पड़

इससे लगभग पन्द्रह दिन तक सम्पूर्ण बगड़ावत महाभारत तथा देवनारायण चरित्र रेकार्डिंग कर एवं लिपिबद्ध किया गया। अम्बालाल ने बताया, देवनारायण रा पांच नाम- देवनारायण, धरमराज, ऊदल, कसन ने देवकाला। देवता में देवनारायण खेमाणा में खाकल। भमरास्या, खाकल, जोयड़ा ने धरमराज री तो धाम चाले। देवनारायण रे चावल ने चूरमो। ताखाजी रे दूध। काला गोरा रे धार ने बकरो चड़े। देवनारायण रो सबूऊं मोटो देवरो सवाईभोज गोठां दड़ावट में आसींदऊं सात कोस। मेवल में कानोड़ भींडर रे पां कचूमरो ने रतलाम रे पां फरणाजी में देव रो देवरो मान्यो थको।

करमच्या घोड़ा जगदेवपुंवार तथा भूणाजी का। नीलागर नामक नीला घोड़ा देवनारायण का। काली टपकी वाली सिंदूरी रंग वाली बोहरघोड़ी बाहराव की। रावत भोज की लाल रंग की बूंली घोड़ी । हेमर धोला घोड़ा रामदेवजी का सफेद घोड़ा। नीमदे पड़िहार का पीला बांडा घोड़ा। रावजी का काला हाथी। शंकर भगवान का भूरा हाथी। पंचमुखा हाथी पांडवों का। आसमानी गधा कपूरी धोबन का। बड़े पुरुषाकार में दायें से हरे झग्गेवाले मेंदूजी, लाल झग्गेवाले भूणाजी, पीले झग्गेवाले भांगीजी। लाल झग्गेवाले कीकाजी। सबसे बड़े देवनारायण बीच में सर्पराज वासक।

भीलवाड़ा के प्रसिद्ध पड़-निर्माता श्रीलाल जोशी ने 12-3-1968 के पत्र में देवनारायण की पड़ के बारे में लिखा, करमच्या घोड़ा देवनारायण के बड़े भाई मेन्दूजी का तथा उनके काका नीया रावत का है। इसका नाम नोलखा है। नीम दे पड़िहार का भी इसी रंग का घोड़ा है। बहाराव की बोहर घोड़ी। यही घोड़ी बाद में इनके पुत्र भूणाजी की रही। रावजी के हाथी के अलावा लाल रंग का गंगाजल नामक घोड़ा भी है । कचहरी का क्रम यह है- दांये से हरे झग्गे वाले भांगीजी (भांगड़े खान कुंवर), लाल झग्गे वाले मदनसिंह (सवाईभोज के बड़े भाई तेजाजी के लड़के), पीले झग्गे वाले भूणाजी (बहाराव के लड़के), लाल झग्गे वाले मेन्दूजी (सवाई भोज के बड़े लड़के) हैं।

भेरू के विविध नाम :

लोकदेव भेरू के विविध नामें में कालो भेरू, गोरो भेरू, जले भेरू, थले भेरू, घाटे भेरू, मसाण्यो भेरू, रगत्यो भेरू, अगत्यो भेरू, अटलो भेरू, भदेर्‌यो भेरू, खोड़्यो भेरू, ढीगालियो भेरू, पो में आवे पदमणी, कालो आवे कलकलतो, दे गोरां ने साग। हाड़-हाड़ में भेरू, जठे नाळ्यो जठे भेरू रा भेरू। घांस भेरू, भेरू बावन । कासी, भदेसर ने कोटा में भेरू रा देवरा। धरमराज, ताखा, मामादेव, पखीघोड़ा वालो भी भेरू है।

जोगण्यों के विविध नाम :

चौंसठ जोगण्या। अंबा, चावंडा, दुरगा, पीपलाज ने कालका पांची देव्यां अलग-अलग चौंसठ रूप धारण करे। सांडमाता, ऊंठाला, एलवा, भदर काली, आवरी, झांतला, फूटोली, लालां फूलां, भरका, अंबा, आमज, संकणी, वेराट, कमस्या, जेमती ई सब जोगण्यां केवा।

कुचामणी शैली के ख्याल :

इन ख्यालों के प्रवर्तक बुड़सू निवासी स्व. लच्छीराम कहे जाते हैं। ख्यालों की यह शैली मूलत: मारवाड़ी शैली से निकली। मारवाड़ी शैली मुख्यत: मारवाड़ी रंगत के नाम से प्रसिद्ध है। इस रंगत के प्रवर्तक झालीराम पुरोहित माने जाते हैं। लच्छीराम के गुरु कुचामण निवासी हकमीचंद थे। प्रारम्भ में प्राय: सभी ख्यालों में सर्वप्रथम भंगी आता फिर भिश्ती तथा उसके बाद आनन्दी का प्रवेश होता था। यह आनन्दी विदूषक रूप लिये रहता था।

इसके कमर के नीचे का पहनावा जनाना तथा ऊपर का मर्दाना होता था। जनाना में घेरघुमेर घाघरा तथा मर्दाना में अंगरखी व पगड़ी रहती थी जिस पर तुर्राकलंगी शोभित रहते थे। लच्छीराम ने इनके स्थान पर हलकारा प्रारंभ किया। ये अपने ख्यालों में जनाना (बड़ा जनाना) बनते थे।

इनके ख्यालों में चंग तथा नगारों का उपयोग किया जाता था। इनके समय में फागण्ये ख्यालों की विशेष बहार रही। ये ख्याल अश्लीलता से ओतप्रोत होते थे जो केवल फाल्गुन महीने में शौकिया मसखरिया लोग अपने मनोविनोद लिए गाते थे। जनसाधारण में गलियों कूंचों में चलते हुए चंग एवं ढोलकी के साथ सामान्य लोग इन्हें गाकर आनंदित होते थे।

लच्छीराम के ख्यालों में चन्दमिलयागिर, गौग चुहाण, मीरां मंगल, विक्रम नागवंती, पारस पितांबरी, नौटंकी, राव रिडमल सोढ़ी, श्रवणकुमार, विक्रमादित्य, बुलिया भटियारिन, राजा चन्द्रसेन, जगदेव कंकाली, भक्त प्रहलाद, सेठ सेठाणी, निहालदे सुलतान, भक्त पूरणमल, खेमजी आभलदे आदि अधिक लोकप्रिय हुए।

कुचामणी ख्यालों में प्रत्येक छोटा-मोटा पात्र सर्वप्रथम अपना परिचय देता है और पाँवों में घुघरे धारण कर नृत्यमय अदायगी प्रस्तुत करता है। ये ख्याल लोकगीतों की धुनों पर विशेष आधारित होते हैं। इनमें कोमिक भी प्राय: लोकगीतों की लोकप्रिय धुनों पर ही प्रदर्शित किये जाते हैं।

इन ख्यालों के लेखकों में कुचामण के लच्छीराम, डेंडा के पूनमचन्द, सिखवाल तथा मोतीलाल, मूंडवा के सदासुख, बीकानेर के मोतीलाल, सामर के घनाघन, ठठियाणा मीठड़ी के रतनलाल खोजी, नांदला के अम्बालाल, मेड़ता के नंदराम तथा उगमराज, डूंमाणा के बालव्यास तथा सिरासनां के नाथूदास भंवरलाल विशेष उल्लेखनीय हैं।

- क्रमश:

नये साल पर नयी पोथी

डॉ. महेन्द्र भानावत की राजस्थान की लोककथाएं प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली से

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।